अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) 卐 सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार 卐 एक प्रति २ आना

वर्ष–३, अंक–७ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १६ नवंबर, '५६

भारत की बादशाही

स्विट्ज़रलैंड के एक भाई हमारे साथ यात्रा में रहे थे। गाँवों में उन्होंने जितना दारिद्रय देखा, उतना पहले कभी नहीं देखा था। इतने दारिद्रय का उन्हें ख्याल भी नहीं था। वे मुझे कहने लगे, "यह सब मैं देखता हूँ, परन्तु आश्चर्य इस बात का लगता है कि उनके चेहरे पर दुःख नहीं, आनन्द ही दीखता है। इसका कारण क्या है ?" हमने कहा, "यह भारत का चमत्कार है। दुःख में भी वे हँसते हैं। रोनी सूरत आपको यहाँ बहुत कम दीखेगी। घर में बहुत दारिद्रय होगा, पर दोपहर में कभी उनके यहाँ जाकर रहिये, वे आपको खिलाये बगैर नहीं भेजेंगे। यह भारत की बादशाही है। भारतीय कहता है कि मैं दुनिया का बादशाह हूँ।"

काबंडपाडी, कोइंबतूर, २४-८-'५६ —विनोबा

भारतीय स्त्रियों के लिए त्रिविध कार्य

(विनोबा)

भिन्न-भिन्न प्रान्तों में घूमते हुऐ बीच-बीच में कस्तूरबा-ट्रस्ट के केन्द्रों में जाने का हमें मौका मिलता है। ये लड़कियाँ छोटे-छोटे गाँवों में जाकर काम करती हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट के काम का एक नियम ही है कि दो हजार से ज्यादा बस्ती जहाँ न हो, ऐसे गाँवों में काम करना होता है। सेवा तो हमें सबकी करनी होती है। जहाँ-जहाँ दुखी जन हैं, वहाँ-वहाँ उनकी सेवा में हमें दौड़े जाना चाहिए। बड़े शहरों में कुछ दुखी लोग नहीं होते हैं सो नहीं है, परंतु सेवा का कुछ-न-कुछ इन्तजाम वहाँ हो ही जाता है, लेकिन छोटे गाँवों में सेवा का कोई इन्तजाम नहीं है।

सर्वोदय का अर्थ है अन्त्योदय

सर्वोदय का नियम है कि जो सबसे नीचे हैं, जो सबसे ज्यादा दुखी हैं, जो परित्यक्त हैं, जिनकी तरफ किसीका ध्यान नहीं जाता, उनकी सेवा में हमारा ध्यान प्रथम जाना चाहिए। यह कोई ऐसा नियम नहीं है कि किसीने खोज निकाला है। परिवार में यही नियम चलता है। परिवार में जो सबसे ज्यादा दुखी व्यक्ति है, उसकी ओर सबका सबसे ज्यादा ध्यान जाता है। एक मनुष्य के दुःख से सारा कुटुम्ब दुखी होता है। कुटुम्बवालों की कुल दृष्टि उस दुःखी अवयव को सुखी बनाने में एकाग्र होती है। देह में भी यही नियम चलता है। मान लीजिए कि देह में बहुत सारे अवयव ठीक हैं, परंतु कोई अवयव दुःख से पीड़ित है, कहीं फोड़ा हुआ है। या जख्मी हुआ है, तो देह का ध्यान उस ओर जाता है। बाकी के अवयव सुखी होते हैं, तो उनकी ओर ध्यान नहीं जाता। जो जख्मी अवयव है उसकी सेवा में चित्त लगता है, उसी की सेवा में चित्त एकाग्र होता है। दूसरे अवयवों के लिए खाना-पीना तो चलता ही है। खाना किसीको भी नहीं छोड़ता है, परंतु सबसे ज्यादा ध्यान जख्मी अवयव को दुरुस्त करने में जाता है। तो जो नियम परिवार और शरीर का है, वही सर्वोदय का है। इसलिए 'सर्वोदय' को "अंत्योदय" का नाम दिया गया; याने जो आखिरी मनुष्य, उसकी सेवा प्रथम करनी चाहिए। उस दृष्टि से कस्तूरबा-ट्रस्ट का सारा सेवा-कार्य छोटे-छोटे गाँवों में चलता है। कई जगह तो बिलकुल जंगलों के गाँवों में भी केन्द्र बने हैं। उन सब बहनों के लिए हमारे मन में आदर है।

> भोग त्याग की बराबरी म तब आता है, जब वह भक्ति का रूप लेता है और जब हम दूसरे को देकर भोगते हैं। परोपकारी मनुष्य का भोजन भी यज्ञ हो जाता है। जो मनुष्य राग-द्वेषरहित होकर मनुष्य की सेवा करता है, उसकी नींद भी समाधि हो जाती हैं। इसलिए 'कुरल' ने कहा कि तुम दूसरे को देकर खाओगे, तो तुम्हारा खाना भी ईश्वर की भक्ति हो जायगा।
>
> (धवलपेट, कोइंबतूर, २६-८-५६)
>
> —विनोबा

हिन्दुस्तान में सेवा की कमी नहीं है। बहनों में विशेष तौर पर सेवा की भावना होती है, परंतु यह सारी सेवा-भावना परिवार में कैद हो गयी है। जो कैदी हो गया, उसकी पूरी ताकत प्रकट नहीं हो पाती है। इसलिए हमारी सेवा-भावना और प्रेम की जो ताकत है, वह पूर्ण रूप से अपने समाज में प्रकट नहीं हो रही है।

विधवाओं की एकांगी सेवा

हिन्दुस्तान में ऐसी कितनी ही विधवाए हैं, जो फिर से संसार में पड़ना उचित नहीं समझतीं और पवित्र जीवन बिताती हैं। परंतु उनकी भक्ति का प्रकार समाज-सेवा के रूप में प्रकट नहीं होता, बल्कि बाल-बच्चों और संसार से अलग रहने का उनका जितना निश्चय होता है, उतना ही उनके मन में शायद यह भी निश्चय रहता है कि हमको दुनिया की सेवा क्या करनी है। शायद सेवा याने घर की ही सेवा, ऐसा वे समझती हैं। अनासक्ति से, परमात्म-भावना से की हुई समाज की सेवा का उन्हें ख्याल ही नहीं है। वे सेवा जानती हैं, तो सिर्फ बालबच्चों की सेवा जानती हैं, या तो फिर चिंतन, मनन और ध्यान करें, ऐसा वे सोचती हैं। जब से वे विधवा बन गयीं, उनके ख्याल से सेवा का क्षेत्र गया, इसलिए वे तपस्वी जीवन बिताती हैं। वे तपस्वी जीवन बिताती हैं यह तो अच्छा है। वे भारत के लिए भूषण हैं। परंतु जनसमूह और दुखियों की सेवा में लगना भी तपस्या का एक उत्तम प्रकार है। उसमें शायद उनको यह भी डर रहता है कि जनसमाज की सेवा में लग जायँ, तो कहीं आसक्ति न लग जाय और कहीं फँस न जायँ। शायद यह भी है कि यदि ऐसी स्त्रियाँ समाज की सेवा में लगेंगी तो पुरुषों को भी कुछ अच्छा नहीं लगेगा। कुल मिलाकर हिन्दुस्तान में समाज-सेवा को भक्ति का रूप प्राप्त नहीं हुआ। भक्ति का रूप केवल स्तोत्र-पठन, ध्यान, चिंतन, उपवास, व्रत इत्यादि ही है। वे भी भक्ति के रूप हैं, इसमें कोई शक नहीं, परंतु भक्ति का सबसे उत्तम रूप निष्काम, निरपेक्ष और अनासक्त जन-सेवा में है, उसमें ईश्वर-स्मरण होता है और व्रतनिष्ठा और ब्रह्मचर्य भी होता है; सब कुछ उसमें हो सकता है।

> दिव्य तथा असीम मातृशक्ति के चरणों में आत्मसमर्पण करना, चाहे जितना मुश्किल क्यों न मालूम होता हो, फिर भी हमारे लिए वह एकमात्र फलदायी साधन एवं शाश्वत सहारा है। आत्मसमर्पण का अर्थ है कि हमारी स्वाभाविक शक्तियाँ माता के हाथों में उपकरणरूप हों और हमारी आत्मा माता की गोद का शिशु।
>
> (पांडेचेरी से प्राप्त संदेश)
>
> —श्री अरविंद

कुमारियाँ आजीवन ब्रह्मचारिणी बनें

यह मैंने विधवा की बात बतायी, परंतु अपना पूरा-पूरा जीवन पहले से ही समाज को अर्पण करे, यह भावना स्त्रियों में अत्यन्त कम है। इस प्रकार के पुरुष भी कम होते हैं, लेकिन वैसी स्त्रियाँ तो करीब-करीब नहीं ही होती हैं। यही माना जाता है कि स्त्रियों को तो शादी करनी ही चाहिए। इसके सिवा उसकी कोई गति नहीं है। यह गलत विचार है। यह तो ठीक है कि साधारण स्त्री-पुरुष सब विवाहित ही होते हैं और विवाह के जरिये भी काफी सेवा हो सकती है। परंतु विवाह में पड़े बिना भी समाज की सेवा करने वाले कोई पुरुष होते हैं, वैसे स्त्रियों के लिए सहूलियत हिन्दू धर्म में कुछ कम है। उसमें धर्मशास्त्र का दोष है सो नहीं, लेकिन हिन्दू समाज में एक प्रथा पड़ गयी है। हाँ, कोई गार्गी, वाचक्नवी जैसी महाज्ञानी स्त्री प्राचीन काल में हो गयी, ऐसा सुनते हैं, इधर मीराबाई और आंडाल जैसी

भगवत्भक्त स्त्रियाँ हो गयीं, ऐसा भी सुनते हैं। लेकिन कुल मिला कर ऐसी मिसालें बहुत कम हैं। हमारे समाज में यह बड़ी कमी रह गयी। ऐसी स्त्रियाँ भी हो सकती हैं, जो कुमारी ही हों और वहीं से केवल संन्यासिनी के समान बन कर समाज की सेवा में तन्मय हो जायँ।

परिवार की महिलाएँ बाहर आयें

जो स्त्रियाँ घर-परिवारों में काम करती हैं, उन्हें भी घर-परिवार के अलावा बाहर के काम का कुछ मौका मिलना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि स्त्री-पुरुष में यह भेद रहेगा कि स्त्री का काम अक्सर परिवार में होगा और उसका संस्कारिता देने का काम प्रधान रहेगा। ऐसा तो रहेगा ही, क्योंकि वह कुदरती है, फिर भी अगर ऐसा है कि पुरुष घर में ध्यान न दें और स्त्रियाँ बाहर ध्यान न दें, तो समाज अच्छा नहीं चलेगा। दोनों का दोनों तरफ योग चाहिए। आज तो यहाँ तक हो गया है कि हजारों पुरुष रसोई करना जानते ही नहीं हैं। वे समझते ही नहीं हैं कि उनके ज्ञान में कुछ कमी है, बल्कि शायद भूषण भी समझते होंगे। कभी रसोई करने का मौका आया तो उसे अभाग्य ही समझते होंगे। किसी घर की औरत किसी कारण से रसोई न कर सकी, तो पड़ोसी बहन आकर रसोई बना देगी, लेकिन वह पुरुष नहीं बनायेगा। बनाना जानता ही नहीं होगा, फिर भी अगर लाचार हुआ, तो होटल से खरीद लेगा। जो खाना चाहता है उसे रसोई बनाना आना ही चाहिए। परंतु हमारे समाज में यह दोष रह ही गया है। घर के कामों में किसी प्रकार का ध्यान और दिलचस्पी पुरुष लोग नहीं रखते। वही हालत अपने देश में स्त्रियों की है। याने दूसरे देशों में अच्छी हालत है, सो मैं नहीं कहना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि स्विटजरलैंड में स्त्रियों को मतदान का अधिकार ही नहीं है और वे चाहती भी नहीं हैं, बल्कि ऐसे काम में पड़ना वे अपने मन में नीच कर्म मानती होंगी। यह काम वे पुरुष के लायक मानती होंगी। इस तरह घर का काम और बाहर का काम ऐसा बँटवारा उचित नहीं है। यह घर है और उसमें दरवाजा बनाया है तो बाहर की हवा अंदर आ सकती है। मान लीजिये कि आप बाहर देख ही नहीं सकते हैं, तो घर जेल हो जायगा। कुछ रोमन केथोलिक बहनें संन्यासिनी हैं, लेकिन जिस तरह मैं चाहता हूँ कि वे सेवामय बनें, ऐसी वे नहीं होती हैं। उनकी स्वतंत्र संस्था होती है। उन संस्थाओं के इर्दगिर्द ऐसी दीवारें होती हैं कि मालूम होता है कि यह कोई जेल है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। उसको बाहर की सृष्टि का दर्शन होना चाहिए। यह उन्होंने तो संन्यासिनियों के लिए बनाया, लेकिन हमने करीब-करीब घरवाली बहनों के लिए भी यही जेल की-सी हालत बनायी है। हमारी बहनों को बाहर का दर्शन नहीं होता है। वे घर में ही कैद होकर रहती हैं। स्त्रियों को बाहर की तरफ भी देखना चाहिए।

स्त्रियाँ अपना गुण लेकर समाज-सेवा करें

आज जो मैं कहना चाहता था, वह सबसे बड़ी बात अब कह रहा हूँ। वह यह है कि आज तक पुरुषों ने जो समाज का कारोबार चलाया, वह अच्छा नहीं चलाया। २५ साल के अंदर दो विश्वयुद्ध हो चुके। तीसरा कब होगा, उसकी रोजमर्रा चर्चा चल रही है। यह पुरुषों के कार्यों का परिणाम है। इसलिए समाजसेवा के काम में स्त्रियों को पड़ना चाहिए, लेकिन अपना गुण लेकर पड़ना चाहिए, पुरुषों का गुण स्वीकार करके नहीं, क्योंकि पुरुषों का गुण स्वीकार करके अमेरिका और रूस में कुछ सेवाकार्य चल रहा है, वहाँ पुरुषों के समान बहनें भी हाथ में बंदूक लेती हैं। वहाँ बहनों की पलटनें बनती हैं और वे सेना की मदद के लिए तैयार रहती हैं। उसको वे स्त्रियों की प्रगति का कार्य मानते हैं। लड़ाई में पुरुष कम पड़ रहे हैं, इसलिए स्त्रियाँ उनकी मदद में बंदूक लेकर जायँ, सो मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि पुरुषों ने जो हिंसामय समाज बनाया है, उस हिंसा में से समाज को मुक्त करने के लिए स्त्रियों को अपना गुण लेकर बाहर आना चाहिए। यह दृष्टि जब ध्यान में आयेगी, तो कस्तूरबा-ट्रस्ट का जो कार्य चल रहा है, वह तेजस्वी कार्य बनेगा।

तीन मुख्य बातें

मैंने तीन बातें बतायीं : (१) विधवा बहनों को जनसेवा में पड़ना चाहिए और उनकी सेवा अनासक्तिपूर्वक चलनी चाहिए, (२) कुछ थोड़ी कुमारिकाएँ ऐसी होनी चाहिएँ, जो आजीवन पवित्र जीवन बितायें और समाज को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने की कोशिश करें और (३) कुछ स्त्रियों को घर के समान बाहर भी ध्यान देना चाहिए। आज समाज की रचना हिंसा की बुनियाद पर हुई है, वह बदलनी होगी। पुरुषों को भी घर में कुछ ध्यान देने के लिए प्रेरित करना होगा। समाज में स्त्रियों का इतना त्रिविध कार्य पड़ा है। स्त्रियों को उद्योग की तालीम मिलनी चाहिए। उनको सम्पत्ति आदि का हक होना चाहिए, उनको पढ़ाई भी मिलनी चाहिए। कस्तूरबा-ट्रस्ट के काम से चंद स्त्रियाँ ऐसी तेजस्वी निकलें कि जो समाज का परिवर्तन करने में समर्थ हों, तो हम समझेंगे कि कस्तूरबा-ट्रस्ट का कार्य यशस्वी हुआ।

हम आशा करते हैं कि आपकी यह संस्था सर्वोदय का पॉवर हाऊस होगी और यहाँ से सब ओर ताकत फैलेगी। आसपास की जनता के साथ इसका गहरा संबंध होना चाहिए, लोगों के जीवन से ओतप्रोत हो जाना चाहिए। यहाँ से जो लड़कियाँ तैयार होंगी, वे सर्वोदय-विचार का उत्तम जीवन व्यतीत करेंगी और जहाँ भी जायँगी, अपने सुन्दर जीवन की सुगंध ले जायँगी और आसपास के वातावरण को खुशबूदार बनायेंगी। यहाँ पर सर्वोदय-विचार का उत्तम अध्ययन होना चाहिए। "गीता-प्रवचन" जैसी किताबें एक दफा पढ़ने की नहीं हैं। उसका सतत अध्ययन होना चाहिए। यहाँ की हर लड़की आत्मनिष्ठ होनी चाहिए, जो शरीर को सेवा का साधनमात्र समझेगी और अपने को शरीर से भिन्न समझेगी। इस स्थान से हम ऐसी आशा रखते हैं।*

---

* कस्तूरबा-ट्रस्ट की ओर से चलने वाले तमिलनाड के प्रमुख कस्तूरबा-केंद्र, कस्तूरबाग्राम (कोइंबतूर) में सेविकाओं के बीच किया गया भाषण, २८-१०-'५६।

अहिंसक राजनीति में विरोधी पक्ष

(जो० कॉ० कुमारप्पा)

[इस महत्त्वपूर्ण विषय पर गांधी-विचार के एकअधिकारी प्रवक्ता श्री जो० कॉ० कुमारप्पा ने १९४८ की फरवरी में 'ग्रामोद्योग पत्रिका' में जो विचारप्रवर्तक लेख लिखा, उसका अनुवाद यहाँ दिया जा रहा है। उन्होंने इंग्लैंड में ८ अगस्त ४८ को, 'युद्ध-विरोधी परिषद' में जो भाषण किया था, उसका कुछ अंश लेख के आरंभ में दिया गया है।—सं०]

अहिंसक राज्य में 'राजा का विरोधी पक्ष' (हिज़ मैजेस्टीज़ अपोज़िशन) के लिए जगह नहीं है। फिर भी 'विरोधी पक्ष' का काम तो होना ही चाहिए। उसके बिना कोई सरकार काम नहीं कर सकती। विरोधी पक्ष का मुख्य फ़र्ज़ है सरकार की नीति को कुछ खास दिशाओं में मोड़ना। नुक्ता-चीनी करने वालों की ज़रूरत होती है। लेकिन उनका दायरा हिंसक उपायों से अलहदा होना चाहिए। इंग्लैंड में जो विरोधी पक्ष है, वह हिंसक राज्य-व्यवस्था का ही अंग है। मेरा सुझाव यह है कि विरोधी पक्ष नदी के किनारों की तरह होना चाहिए। नदी के किनारे, जब तक वे मज़बूत चट्टान के हों, नदी की धारा को उसके पाट में मर्यादित रखते हैं। लेकिन चट्टान तो चट्टान ही है। इसलिए वह नदी के पाट में लुढ़क कर उसकी धारा को रोक नहीं देता। इंग्लैंड में ऐसा होता है। विरोधी पक्ष के मन पर हमेशा यह बात असर करती रहती है कि आये दिन हम भी हुकूमत की गद्दी पर होंगे।

प्रतिस्पर्धा का गलत अर्थशास्त्र

नदी के प्रवाह का नियमन उसके किनारे जिस तरह करते हैं, उसी तरह देश की सरकार का नियमन उन सत्ताओं को करना चाहिए जो कि सरकारी ढाँचे से बाहर की हों। इंग्लैंड इस बात पर गर्व करता है कि उसकी पार्लियामेंट दुनिया भर की पार्लियामेंटों की 'आदिमाता' है। वहाँ सरकारी खर्च से 'राजा का विरोधी पक्ष' चलाया जाता है। उसका काम यह है कि सरकार जो कदम उठा रही हो या उठाने का इरादा करती हो, उसका नियंत्रण करने के लिए उस पर लोकमत की तेज़ रोशनी डाले। ब्रिटिश पार्लियामेंट वह रणभूमि है, जहाँ राजनैतिक योद्धाओं में अनेक प्राणांतक द्वन्द्व खेले जाते हैं। जो योद्धा परास्त होते हैं, वे विजेताओं के लिए जगह खाली कर देते हैं। पार्लियामेंट के वाद-विवाद में अगर दाँव लग गया, तो आज जो विरोधी बेंचों पर बैठे हैं, वे ही कल बडी शान से सरकारी बेंचों पर बैठे हुए दिखायी देंगे। ब्रिटिश पार्लियामेंटरी पद्धति में विरोधी पक्ष की यही भूमिका है। प्रतिस्पर्धा का अर्थशास्त्र राजनीति के क्षेत्र में दाखिल किया गया। उसका यह नतीजा है।

साम्राज्यवाद का लालच

आर्थिक क्षेत्र में जो साम्राज्यवाद मौजूद है, उसका प्रतिबिंब मंत्रिमंडल की बनावट में भी दिखायी देता है। केंद्रित उद्योगों के लिए यह ज़रूरी है कि संसार की दश-दिशाओं से कच्चा माल जुटाया जाय और उसका पक्का माल बना कर दुनिया के

हर कोने के बाज़ारों में भेजा जाय। इसके लिए पैसे का उपयोग बहुत बड़े पैमाने पर करना पड़ता है और यातायात के साधन तथा राजनैतिक सत्ता अपने हाथ में लेने की आवश्यकता पैदा होती है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए वैदेशिक नीति, आर्थिक व्यवस्था, सेना, नाविक सेना और वैमानिक सेना इत्यादि साधन अनिवार्य हो जाते हैं। इसीलिए ब्रिटिश-मंत्रिमंडल में इन महकमों को बड़ी इज्ज़त की जगह दी जाती है और उनकी तरफ़ हर शख़्स लालचभरी आँखों से देखता रहता है।

स्पर्धा और साम्राज्यवाद दोनों की जड़ें हिंसा में हैं।

अर्थ-रचना अहिंसा और सहयोग की हो

हमारे देश ने शासन की बागडोर सम्हाली है। अगर हम अहिंसा के रास्ते पर चलना चाहते हैं, तो हमारे शासन का स्वरूप क्या होगा? हमारी सरकार को भी एक ऐसी 'परिशोधक' (गलती सुधारने वाली) ताकत की ज़रूरत होगी, जो 'विरोधी-पक्ष' का फ़र्ज़ अदा कर सके। लेकिन हम तो ऐसी अर्थ-व्यवस्था चाहते हैं, जो कि सहयोग की बुनियाद पर खड़ी हो, न कि स्पर्धा या होड़ की बुनियाद पर। हमारी अर्थ-व्यवस्था में विरोधी सदस्य इस ताक में नहीं रहेंगे कि कब पार्लियामेंटरी बहस का पासा हुकूमतनशीन पार्टी के खिलाफ़ पलटता है और कब हम हुकूमत पर सवार होते हैं। अहिंसा और सहयोग की अर्थ-रचना में व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा के लिए कोई गुंजाइश नहीं। हमारा उद्देश्य मंत्रियों की जगह लेने का नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें उनके सामने समाज-रचना के ऐसे नमूने पेश करने चाहिए, जिनका वे अनुकरण कर सकें। रचनात्मक कार्यकर्ताओं को अपने व्यक्तिगत उदाहरण से रास्ता दिखाने वाली मशाल की तरह उन्हें सही रास्ते को तरफ़ ले जाना चाहिए।

लोकसेवकों का संगठन

अहिंसक अर्थ-रचना में रचनात्मक कार्यकर्ताओं पर यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आ पड़ती है। इस मार्गदर्शक शक्ति का विकास करने के लिए रचनात्मक कार्यकर्ताओं के एक संगठन की ज़रूरत होगी। उनकी लोकसेवा ही उनकी शक्ति का अधिष्ठान होगी और उनके काम का गुण ही उनका अधिकारपत्र होगा। मंत्री इस संस्था से प्रेरणा पायेंगे और वह संस्था इस देश के धर्म-निरपेक्ष राज्य को सलाह तथा मार्गदर्शन देगी। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए यह संस्था ऐसे त्यागी लोगों की बननी चाहिए, जिनकी एकमात्र आकांक्षा लोकसेवा ही हो।

ऐसी राज्यव्यवस्था में मंत्रिमंडल के हाथ में ऐसे महकमे होंगे, जो स्वयंपूर्ण अर्थ-रचना के लिए जरूरी हैं। खेती, जमीन की तरक्की, जमीन के कटाव का इलाज, खेती के लिए नयी ज़मीनें तैयार करना, मौजूदा जमीनों को खाद देना, आबपाशी; बाढ़-नियंत्रण, जंगल, ग्रामोद्योग और गृहोद्योग, खनिज पदार्थ, भारी उद्योग, लोक-स्वास्थ्य, शिक्षण और गृह विभाग—ये मुख्य महकमे होंगे। ऐसी राज्यव्यवस्था में विदेश-नीति, वित्त-विभाग और संरक्षण विभाग, चाहे वे कितने ही महत्त्व के क्यों न हों, फिर भी उनका इतना महत्त्व नहीं रहेगा कि वे मंत्रियों को सौंपे जायँ।

इस तरह की राजनैतिक व्यवस्था में रचनात्मक कार्यकर्ताओं का यह संगठन लोगों को शोषण से बचाने के लिए जिरहबख़्तर का काम देगा। इस भूमिका पर जो सरकार बनेगी, वह लोकनीति को आवश्यक प्रोत्साहन देगी और उनके कल्याण का निश्चित रूप से आयोजन कर स्वराज्य को जनता तक पहुँचायेगी।

समस्याएँ शांति से हल हों

इस समय पश्चिम एशिया में जो गम्भीर अवस्था उत्पन्न हो गयी है, वह यदि चलने दी गयी, तो इसमें शक नहीं कि वर्त्तमान संयुक्त राष्ट्र संघ पुराने राष्ट्र-संघ की भाँति ही बेकाम हो जायगा और संसार को ऐसी व्यापक सर्व-संहारकारिणी परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, जो द्वितीय महायुद्ध की अपेक्षा कहीं अधिक विनाशकारिणी सिद्ध होगी। पश्चिम एशिया में जो युद्ध आरम्भ किया गया है उसका कारण बिल्कुल निस्सार है। युद्धारम्भ करने के लिए जो बहाने बताये गये हैं, उनमें कोई भी दम नहीं है। यह युद्ध इन कारणों पर होना ही नहीं चाहिए था।

समाजवादी ही नहीं, बल्कि संसार के सभी शान्ति प्रेमी लोगों को पश्चिम में घटने वाली ये घटनाएँ अत्यन्त चिन्ताजनक और विस्मयकारक प्रतीत होंगी। बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में भी यह सोचना कि किसी आन्तर्राष्ट्रीय समस्या का हल युद्ध से सम्भव है राजनीतिक दिवालियेपन का द्योतक है। आन्तर्राष्ट्रीय समस्या हल करने के प्रसंग में जहाँ राष्ट्रसंघ का सबसे बड़ा उपयोग होना चाहिए था। वहाँ उसकी उपेक्षा ही नहीं की गयी है, वरन् उसे लात मारने की चेष्टा भी हो रही है।*

—ऊ बा स्वे

---

* एशियाई समाजवादी सम्मेलन के अध्यक्षपद से किया गया भाषण

ग्रामदान के बाद कोरापुट : राजनीति

(गोपबन्धु चौधुरी)

कोरापुट जिले में जब से ग्रामदान-आन्दोलन की शुरूआत हुई, उसी समय से इस समस्या का नग्न रूप वहाँ दिखायी देने लगा था। जब गाँववालों ने ग्रामदान देना शुरू किया, तभी से कार्यकर्ता-वर्ग ने इसे भूदान का यथार्थ क्रमविकास मान कर स्वागत किया था। लेकिन अचानक कुछ राजनीतिक पक्षों के सिर पर राजनीति का भूत सवार हो गया। ग्रामदान के कारण लोगों में जो एकता पैदा होने लगी, उसके कारण उन लोगों पर उन पक्षों का जो राजनीतिक असर है, वह शायद अब न रहेगा, इस शंका से वे इस ग्रामदान-आन्दोलन से अलग हो गये। यहाँ तक कि एक जगह उन लोगों ने भूदान तथा ग्रामदान के खिलाफ 'इसमें बड़ा भारी खतरा है', कह कर प्रचार शुरू कर दिया। जहाँ ये भिन्न-भिन्न पक्षवाले दूसरी जगह एक-दूसरे का विरोध करते थे, वहाँ ये ग्रामदान के खिलाफ संयुक्त मोरचा लेने लगे। उन कार्यकर्ताओं की पार्टी ने एक संस्था की हैसियत से तो भूदान का विरोध नहीं किया, परन्तु उन-उन पार्टियों की ओर से इस इलाके में काम करने वालेकार्यकर्ताओं ने एक परिपत्र द्वारा इसका विरोध किया। इसके पीछे यह डर भी था कि ग्रामदान की वजह से जनता में जो सामूहिक भावना पैदा होगी, उससे ये लोग साहूकार, सरकार तथा जमींदारों के कब्जे से छूट जायँगे। फिर चुनाव के समय बिना सोचे-समझे बक्स के अन्दर वोट डाल देने का तरीका कामयाब न होगा।

परन्तु विरोध का यह छूत फैल नहीं सका। एक छोटे से दायरे में ही यह सीमित हो गया। ग्रामदान मिलने के बाद जब बँटवारे का काम शुरू हुआ तथा गाँव की माली हालत सुधारने का प्रयत्न होने लगा, तब मुझे लगा कि सिर्फ शोषक-वर्ग नहीं, राजनीतिक पक्ष के ये कार्यकर्ता भी सोच में पड़ गये। साहूकार और व्यापारियों के हाथ में अब गाँव का नेतृत्व नहीं रहने वाला है, यह भास भी उन्हें हुआ। एक-दो मिसालें दे दूँ :— गाँववालों के जमीन बाँट लेने के बाद गाँव के बाहर या दूसरे गाँवों में रहने वाले मालिकों की जो जमीन उस गाँव में हो, वह उनसे दान माँगने का विचार गाँव में होने लगा। इसमें कामयाब होने के बाद गाँव के साहूकार को समझा-बुझा कर गाँववालों के व्यक्तिगत कर्जों को गाँव का कर्ज बना देने के लिए राजी कराने का कार्यक्रम शुरू हो गया। साहूकार लोग इस विचार के अनुसार बरतने के लिए तैयार हो गये। न मान कर वे करते भी क्या? कोई लिखापढ़ी करके कर्जा उन्होंने थोड़े ही दिया था? इस तरह गाँववाले तथा साहूकार लोग मिल कर आपस में कर्जा संबंधी फैसला करने लगे। अचानक देखा गया कि एक राजनीतिक पक्ष के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता, जो उन गाँवों के निवासी नहीं हैं, वहाँ आकर साहूकार का पक्ष लेकर सैकड़ा पीछे पचास रुपये ज्यादह देकर फैसला कर लेने का प्रस्ताव पेश कर रहे हैं। उनके इस प्रकार के बर्ताव का कारण क्या है? फिर पूछताछ करके कारण भाँप लेने का मौका भी कहाँ है? उन्हीं की बातचीत से मालूम हो गया कि उस इलाके में चुनाव के समय वे खुद या उनके पक्ष से कोई भाई वहाँ उम्मीदवार होने वाले हैं। साहूकार को अगर प्रसन्न किया जा सके तो, उस समय उससे मदद मिल सकती है, यही विचार इसके पीछे है।

शराबबन्दी के खिलाफ ये राजनीतिक पक्ष किस तरह प्रचार कर रहे हैं, सो तो जाहिर ही है। चुनाव के समय नशेबाज पैसेवालों का समर्थन पाने के इरादे से उन्हें किस तरह शराब पीने की छूट मिल सकेगी, इसके लिए उनकी कोशिश चलती है।

राजनीति का यह भूत गाँव के निर्माण-योजना में किस तरह बाधक हो रहा है तथा होने वाला है, उसका सबूत अब मिल रहा है। राजनीतिक पक्षभेद रहते हुए भी अब दोनों पक्षों के लोग गाँव की भलाई के लिए मिलजुल कर काम कर सकते हैं, यह बात आसानी से इनके गले नहीं उतरती। चुनाव का समय जब करीब आ जायगा, उस समय ये सारी उलझनें पैदा होंगी।

ये सारी बातें भूदान-कार्यकर्ताओं की निष्पक्षता तथ जागरूकता पर दारोमदार हैं। फलाना भूदान-कार्यकर्ता फलाने पक्ष का समर्थक है, ऐसा भास भी कहीं होगा तो यह एक खतरनाक चीज होगी। कार्यकर्ता चाहे जिसको वोट दें, मगर उनके बरताव में किसी भी पक्ष की ओर झुकाव दिखायी न दे। कार्यकर्ताओं को सर्व-सेवा-संघ का चुनाव-सम्बन्धी प्रस्ताव तथा विनोबाजी के प्रवचनों का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिए। यह बात सही है कि कहीं-कहीं हमारे कार्यकर्ता खुद निष्पक्ष होते हुए भी उनकी गैरहोशियारी के कारण कुछ राजनीतिक पक्ष भूदान के

खिलाफ काम कर रहे हैं। ग्रामदानी गाँवों में जो निर्माण का काम हो रहा है, चुनाव के कारण आपस में मनमुटाव पैदा होकर उस निर्माण-काम को भी गाँववालों के बिगाड़ देने की संभावना दीख पड़ती है। हमारे कार्यकर्ता ही इस ओर सही कदम उठा कर खुद निष्पक्ष बन कर मुस्तैदी के साथ सही-सही बात बता कर उन्हें इस से रोक सकते हैं। इससे गाँववाले आसानी से यह समझ जायेंगे कि भिन्न-भिन्न वाद होते हुए भी सामूहिक रूप से काम करने में कोई भेद नहीं रहना चाहिए।

लोकनीति क्या है तथा सभी प्रकार के मतवाद किस तरह उसी की ओर आगे बढ़ रहे हैं, इसके बारे में कार्यकर्ताओं को चिन्तन-मनन तथा अध्ययन करना चाहिए।

(उड़िया 'ग्रामसेवक' से)

ग्रामसेवकों का कर्तव्य

(महात्मा गांधी)

ग्रामसेवक गाँव में जाकर नियमपूर्वक चरखा चला कर सूत ही नहीं कातेगा, बल्कि अपनी जीविका के लिए बसूला या हथौड़ा चलायेगा, कुदाली या फावड़ा चलायेगा। खाने-पीने और सोने के लिए आठ घंटे निकाल कर बाकी का उसका सारा समय किसी-न-किसी काम में लगा ही रहेगा। अपना एक मिनिट भी बेकार न जाने देगा। लोगों को वह यह बतलाता रहेगा कि मुझे तो यज्ञ करना है, शरीर का पालन-पोषण शारीरिक श्रम से ही करना है।

हर व्यक्ति अन्न उपजाये

हमारे देश से अगर आलस्य बिदा न हुआ, तो कितनी ही सुविधाएँ क्यों न मिलें, लोग भूखों ही मरेंगे। जो अन्न के दो दाने खाता है, उसे चार दाने उपजाने का धर्म स्वीकार करना ही चाहिए। ऐसा न हुआ, तो जनसंख्या चाहे कितनी ही कम हो जाय, हमारी भुखमरी की समस्या हल न होगी और अगर ऐसा हो जाय, इसे धर्म मान लिया जाय, तो दूसरे करोड़ों मनुष्य भी हिन्दुस्तान में पलने लगें।

इस तरह ग्रामसेवक उद्यम की जीती-जागती मूर्ति होगा। वह कपास बोने से लेकर चुनने और बुनने तक की खादी की सभी क्रियाओं में निष्णात बनेगा और हमेशा उन्हें पूर्ण बनाने का ही विचार करता रहेगा। इस प्रकार जिन सेवकों ने ग्रामसेवा के काम में रस लिया होगा, वे गाँवों में जायेंगे तो शिक्षक के रूप में, पर वहाँ खुद सीखने वाले बन कर रहेंगे। नित्य नूतन शोध और साधना करते रहेंगे। मेरी कल्पना यह नहीं है कि वे १६ घंटे खादी के ही काम में लगे रहें, बल्कि खादी के काम से जितना समय उन्हें मिले, उसमें वे गाँव के चालू उद्योग-धन्धों की खोज करें और उनमें दिलचस्पी लें तथा लोगों के जीवन में अपने को ओतप्रोत कर दें।

सफाई का ध्यान रखना मुख्य

गाँव की सफाई और स्वच्छता ग्रामसेवक का दूसरा मुख्य काम होगा। जिस तरह वह अपने घर-आँगन को साफ रखेगा, उसी तरह लोगों के आँगन और सारे गाँव में सफाई करता रहेगा।

ग्रामसेवक गाँवों में वैद्यराज या डाक्टर बनने का धन्धा नहीं करेंगे। ये ऐसे फन्दे हैं, जिनसे बचना चाहिए। आपका काम तो उन्हें सफाई, स्वच्छता और आरोग्य के नियम सिखाने का है। स्वेच्छाचारी बन कर, गंदे रह कर और गाँव को गंदा रख कर ये लोग बीमार पड़ें और आपका दवाखाना इन्हें दवाइयाँ दे, यह तो ग्रामसेवा नहीं है। आपको तो गाँववालों को संयम और स्वच्छता सिखानी चाहिए, जिससे बीमारी उनके पास फटकने न पावे। चंपारन में हमारे पास कुनैन, रेंडी का तेल और आयोडीन—यही तीन दवाएँ रहती थीं। आरोग्य और सफाई की बात ही ग्रामसेवक को लोगों के दिलों में बिठानी है।

हरिजन-सेवा

ग्रामसेवक को गाँव के हरिजनों की सेवा करनी है। उसका घर हमेशा हरिजनों के लिए खुला रहेगा। संकट और कठिनाई के समय स्वभावतः वे लोग उसके पास दौड़े आयेंगे। अगर गाँववाले उस सेवक के घर में हरिजनों का आना-जाना पसन्द न करें और उसे अपनी बस्ती से निकाल बाहर कर दें या वह वहाँ रह कर हरिजन-सेवा न कर सके, तो वह हरिजन-बस्ती में ही जाकर बस जाय।

सेवा से जीविका चलाये

मनुष्य जितना खाता है, उससे अधिक पैदा करने की शक्ति ईश्वर ने उसे दी है। दुर्बल से दुर्बल मनुष्य भी इतना पैदा कर सकता है। इसके लिए वह अपने बुद्धिबल का उपयोग करेगा। लोगों से वह कहेगा कि मैं आपकी सेवा करने के लिए आया हूँ, पेट के लिए आप मुझे दो रोटियाँ दे दें। संभव है कि लोग उसका तिरस्कार करें। फिर भी वह अपने गाँव में जमा रहेगा। उसने यदि सर्वार्पण कर दिया है, तो हरिजनों के घर से रोटी लेने में उसे लज्जित न होना चाहिए। पर जहाँ लोगों का सहयोग न मिले, वहाँ वह खुद कोई भी उद्योग करके अपनी जीविका चला सकेगा।

आध्यात्मिक साधनों का ही प्रयोग

हमारे सारे अस्त्र-शस्त्र आध्यात्मिक हैं। आध्यात्मिक शक्ति हाथ में आयी कि फिर उसे कोई रोक नहीं सकता—यद्यपि आध्यात्मिक शक्ति इन आँखों से प्रत्यक्ष दिखायी देने वाली कोई साकार चीज नहीं है। इसलिए आपकी सब प्रवृत्तियों की भूमिका आध्यात्मिक ही होनी चाहिए। इसलिए आपका व्यवहार और चरित्र शत-प्रतिशत शुद्ध होना चाहिए।

('हरिजन सेवक' ७-९-३४)

बहुमतवादी लोकतंत्र की असफलता

(लक्ष्मीनारायण भारतीय)

आखिर दुनिया की नैतिक ताक़तों को ठुकरा कर इग्लैंड और फ्रांस ने मिस्र पर, इज़राईल की ओट लेकर, नग्न हमला कर ही दिया। इतनी असहायता इस काल में शायद पहले कभी मालूम नहीं हुई। सारी दुनिया ने एक स्वर से निंदा की। यू०एन०ओ० ने, जो पश्चिमी राष्ट्रों का अपना अखाड़ा ही बन गया है, इसकी निंदा की और अमरीका जैसे अनन्य साथी ने तक उसे बड़ी गलती बताया। फिर भी ईडन-मोले इस समय सारी लज्जा ताक पर रख कर पाशविक आक्रमण में संलग्न हैं। उन्हें स्वेज नहर पर कब्जा करना है, उसे आंतर्राष्ट्रीय स्वामित्व में लाना है और मिस्र की प्रभुसत्ता समाप्त करनी है। इसके लिए कोई भी कदम उनके लिए गर्ह्य नहीं है। दुनिया की शांतिवादियों की वाणी कभी इतनी निर्बल साबित नहीं हुई होगी। वैसे, इस वाणी ने अभी जनशक्ति का रूप नहीं लिया था, फिर भी कुछ ऐसे आसार नज़र आ रहे थे कि शांतिवादी ताकतें कुछ काम कर रही हैं और भले ही हायड्रोजन बम का भय सबके सिर पर व्याप्त हो, दुनिया का जनमत ऐसा प्रभावशाली बन रहा है कि जो ऐसे नग्न आक्रमणों का प्रतिरोध कर सके।

इंग्लैंड-फ्रांस का वहशी कदम

अभी हमने देखा कि हंगरी में रूसी सेनाओं के आक्रमण की कितनी निंदा इंग्लैंड आदि राष्ट्रों ने की। उत्तर कोरिया के आक्रमण के समय भी किस मुस्तैदी से उसके खिलाफ़ हथियार उठाये गये। फॉर्मोसा, गोवा, जर्मनी आदि के जलते प्रश्न भी इस समय शांतिपूर्वक हल करने की ओर ही दुनिया का झुकाव था और एक तरह आंतरराष्ट्रीय मामलों में ऐसी जबर्दस्ती के खिलाफ़ ही वातावरण बन रहा था। स्वेज के मामले में भी यही नीति अख्तियार की जायगी, ऐसा लग रहा था। लेकिन बिल्कुल 'वहशी' तरीके से इंग्लैंड-फ्रांस ने कदम उठाया, जब कि तथाकथित आक्रमक कम्युनिस्ट राष्ट्र भी ऐसा करने की हिम्मत न कर सकते थे।

'बहुमत'वादी 'लोकशाही' की पाशविकता !

इसमें सबसे क्षुब्ध करने वाली घटना यह है कि इंग्लैंड की सरकार ने अपने ही मुल्क की एक बहुत बड़ी प्रातिनिधिक पार्टी—लेबर पार्टी—की तीव्र भावनाओं एवं विरोध को भी ठुकरा दिया। वह पार्टी एक बहुत बड़े, ४८-४९ प्रतिशत जनमत, की नुमाइंदा पार्टी है। ७०-७५ से ज्यादा बहुमत कॉन्जरवेटिव पार्टी का कभी रहा नहीं। बल्कि आज यदि चुनाव हों, तो हर हालत में ५० से ज्यादा प्रतिशत मत ही लेबर पार्टी को मिलेंगे। परंतु सत्ताधारी पार्टी ने चुने हुए नुमाइंदों के पाशवी बहुमत के बल पर इतना बड़ा कदम उठा लिया और न्यूनतम अल्पमत के साथ-साथ बहुजन समाज को भी नहीं माना। लोकतंत्र की इतनी बड़ी विडंबना उसी देश ने की, जहाँ की पार्लियामेंट दुनिया की पार्लियामेंटरी लोकशाही की जन्मदात्री मानी जाती है! चुने हुए पक्ष के हाथ में सत्ता का हस्तांतरण, फिर वहाँ भी चंद जंगखोरों का प्रभुत्व और अंत में ईडन जैसों के हाथ में सत्ता का केंद्रीकरण होता है और फिर वे ही ईडन-मोले जैसे आज दुनिया के भाग्यविधाता बन जाते हैं! कोटि-कोटि जनता चंद व्यक्तियों के हाथ का खिलौना बन कर असहाय हो जाती है और अपनी शक्ति भूल कर आइजनहावर-बुल्गानिन की ओर सहायता के लिए ताकती है। लोकतंत्र का इससे बड़ा कोई मज़ाक़ हो नहीं सकता था। यह 'बहुमत'वादी 'लोकशाही' इतनी पाशविकता भी बरत सकती थी, यह किसीने नहीं सोचा था।

युद्धोन्मुख स्थिति की समस्या

दुनिया के सामने बड़ी गंभीर समस्या है कि आखिर अब ऐसी युद्धोन्मुख स्थिति का मुकाबला किया भी तो कैसे जाय ? एक क्षण में जो शांतिवादी ताक़तें, नैतिक प्रभाव मटियामेट हो सकते हैं, वे किस प्रकार अपने को शक्तिशाली बनायें ? राजाशाही के विलयन के बाद इसी लोकतंत्र पर सबकी आशाएँ लगी रहीं। बीच में एक तानाशाही का उदय हुआ, जिसने विभिन्न रूपों में अपना आस्तित्व अभी तक जताया, पर उसका भस्मासुर उसीके सिर बैठा और उसने खुद रूस में और अब हंगरी-पोलंड आदि में तानाशाही की क़ब्र खोदना शुरू किया। अभी हमने देखा कि हंगरी के रूप में, पोलंड के रूप में कैसे पूर्वी यूरोप ने बगावत करके बाह्य प्रभुत्व को ठुकरा दिया। कोई चीज़ कितनी भी एवं कैसी भी दबायी जाय, अंततः वह कभी उठ सकती है और विकराल रूप में उठ सकती है, यह फिर एक बार हंगरी ने बता दिया। रूस-चीन की क्रांति के गीत हमने कम नहीं गाये। परंतु उन क्रांतियों के पीछे ताकत —सैंक्शन —पाशवी शक्ति की ही थी, भले ही बाद में वह राजदंड के रूप में परिवर्तित हुई हो। जनता का, परिस्थिति का, समाज का परिवर्तन विचार और हृदय-परिवर्तन से नहीं, दंड और हिंसा से किया गया या हुआ ऐसा माना गया, जिसका परिस्फोट हंगरी-पोलंड की बगावतों के रूप में हुआ। यह एक संकेत भर है। लेकिन ऐसे सबक़ भी इंग्लैंड-फ्रांस जैसे 'लोकतंत्री' देश याद नहीं रखना चाहते और सायप्रस, अल्जेरिया, मिस्र आदि को "दवा" देना चाहते हैं ! तानाशाही की यह तीव्र असफलता, जो आज कम्युनिस्ट देशों में दीख रही है, एक ऐसा उदाहरण है, जो सारी राजनीति की दृष्टि बदल सकता है। हंगरी आदि बड़ी आशाभरी दृष्टि से कम्युनिस्ट-तंत्रवादी एकाधिकारशाही ठुकरा कर पार्लियामेंटरी शासन-पद्धति की ओर मुड़ रहे हैं। अब दुनिया के लिए यही जनतंत्र एक-मात्र आशा का स्थान है। परंतु फ्रांस-इंग्लैंड में हम देख रहे हैं कि वह भी कितना असफल सिद्ध हुआ है ! केवल वहीं नहीं, सर्वत्र यही स्थिति है, सिर्फ़ वहाँ यह चीज़ नंगे रूप में प्रकट भर हुई है।

तांत्रिक बहुमत वास्तविक जनतंत्र नहीं

आज अमरीका-रूस का लोकमत भी ऐसे ही चंद व्यक्तियों के हाथ में है, जो "बहुमत" के ऐरावत पर हौदा चढ़ा सकते हैं। इंग्लैण्ड-फ्रांस ने जैसे अपने यहाँ के जनमत को या विरोधी पार्टी को ठुकराया, वैसे ही ये भी किसी क्षण ठुकरा सकते हैं ! अभी-अभी बड़े विचारकों एवं राजनीतिज्ञों ने आवाज उठायी कि विरोधी पार्टी जन तंत्र की रक्षक है, अतः उसका विकास होना ही चाहिए। पर इंग्लैण्ड की अत्यंत जागरूक जनता और उसकी नुमाइंदा विरोधी पार्टी भी आज बहुसंख्य अल्पमत में होने के बावजूद कितनी प्रभावहीन रही है, जनतंत्र की कितनी रक्षा कर सकी है, हम देख ही रहे हैं !! फ्रांस-इंग्लैण्ड जैसे लोकतंत्र के प्रणेता राष्ट्र आज औपचारिक और अत्यल्प बहुमत की डिक्टेटरशिप—तानाशाही—का जो नमूना पेश कर रहे हैं, वस्तुतः वही उसका परिणाम आने वाला था, क्योंकि केवल तांत्रिक बहुमत का शासन कभी वास्तविक जनतंत्र बन नहीं सकता है। वहाँ जनशक्ति की नहीं, संख्याबल की ही महिमा होती है, जिसकी परिणति एक या चंद व्यक्ति की सत्ता में ही हो सकती है। इसीलिए विनोबा कह रहे हैं कि "पं० नेहरू बहुत महान् और उत्तम नेता हैं, फिर भी उनके हाथ में भी सत्ता का केंद्रीकरण गलत होगा," क्योंकि जहाँ वह व्यक्ति हटा कि वहाँ उसकी महत्ता और उत्तमता भी हटेगी और केवल केंद्रीकरण कायम रहेगा, जो फिर आइक-ईडन-मोले-बुल्गानिनशाही में परिणत हो सकता है एवं जनता त्राहिमाम् ही पुकारती रहेगी। ऐसी बहुमतवादी लोकशाही भले ही लोगों द्वारा स्थापित हुई हो, पर जनता का उस पर कोई नियंत्रण नहीं रह पाता, मतदाता शक्तिहीन एवं असहाय्य बने रहते हैं।

हिंदुस्तान राह दिखा सकता है

अब गंभीरता से सोचने का मौका आया है कि पूर्वी यूरोप की घटनाएँ इंग्लैंड-फ्रांस का मिस्र पर पाशवी आक्रमण, आइजनहावर की इंग्लैंड आदि मित्रों के सामने निष्क्रियता, यू० एन० ओ० की तीव्र असहायता, नैतिक ताकतों एवं शांतिवादियों की असफलता आदि का क्या सबब है ? सारी दुनिया ताकती रहे, असहाय होकर देखती रहे, सारी सज्जनता निर्वीर्य होकर बैठी रहे और स्वाभिमानी और सच्चे, लेकिन कमजोर एवं छोटे मुल्क पाशवी आक्रमण के शिकार हों, यह इस युग की अत्यन्त लांछनकारी घटना है। लांछन केवल आक्रामकों पर नहीं, इस असहायता एवं लाचारी पर भी है। इसलिए बुनियादी तौर पर सोचना होगा एवं जनशक्ति—इतने बड़े विश्व की जनशक्ति—कैसे वास्तविक नैतिक शक्ति बन सके, इसका विचार दुनिया के विचारकों को करना होगा। आज यू०एन०ओ० या रूस की फौजी मदद मिस्र को बचा भी ले, तो भी दुनिया में से ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति टाली नहीं जा सकेंगी, क्योंकि एक को काटने के लिए दूसरी वैसी ही चीज़ आधारभूत मान ली गयी है—जो जनशक्ति की प्रेरक नहीं है। आज की लोकशाही को वास्तविक लोकशाही बनाने का तरीका "बहुमतशाही" या "पक्षसत्ता" में नहीं, गांधीप्रणीत सर्वांगण विकेंद्रीकरण में ही है, क्या यह बताने की आवश्यकता है ? लेकिन अभी इसकी आवश्यकता एवं महत्ता महसूस करते हुए भी दुनिया आज की इस बहुमतवादी लोकशाही को छोड़ने के लिए राज़ी नहीं है, क्योंकि इसका प्रायोगिक क्षेत्र भी अभी नहीं कायम हुआ है। वह राजाशाही एवं तानाशाही के नतीजे देख चुकी है और इस लोकशाही के लाभ भी। परंतु इस लोकशाही के दुष्परिणाम अभी पूरी तौर से उसके सामने नहीं आये हैं। मिस्र पर आक्रमण जैसी और कोई कीमत चुकाने के बाद शायद वे दुष्परिणाम उसे तीव्रता से महसूस हों। परंतु कहीं न कहीं प्रायोगिक नमूना यदि उसे देखने को न मिले, तो उसे भय है कि या तो अराजक या तानाशाही, दोनों में से कोई भी एक आपत्ति आ सकती है। यह तो स्पष्ट ही है कि आज की लोकशाही चाहे जितनी बुरी हो, वह राजाशाही एवं तानाशाही के मुकाबले तो लाख दर्जे अच्छी है। इतनी कीमतें चुकाने के बाद जो चीज़ प्राप्त हुई है, वह सहज तो छोड़ी नहीं जा सकती, भले ही उसके कुछ दुष्परिणाम भुगतने पड़ें। इसलिए उसके भी मुकाबले कोई श्रेष्ठतर नमूना प्रस्तुत करना जरूरी है। हिंदुस्तान यह नमूना पेश कर सकता है। वह आंतर्राष्ट्रीय मामलों में शांति की पहल करता ही आया है। नैतिक शक्तियों के संगठन में एवं विश्वशांति कायम रखने के प्रयत्नों में वह अग्रसर भी रहा है। आज उसकी ओर दुनिया आशाभरी निगाह से देख रही है। ऐसी हालत में हिंदुस्तान अवश्य नमूना प्रस्तुत कर सकता है। मिस्र को बचाने की हरचंद कोशिशों के साथ मेल खाने वाली ही यह चीज़ होगी, क्योंकि अपनी लाख कोशिशों के बावजूद जो असफलता मिली है, वैसी असफलता से आगे वह दुनिया को बचा सकता है। यह असफलता दरअसल उस पद्धति की ही है, जिसे कायम रख कर कोशिशें की जाती हैं। इसलिए दुनिया की शांतिवादी ताकतें भी असफल हो रही हैं—या कम से कम एक बार तो असफल हो चुकी हैं। अब यदि वे मिस्र को पुनः उसमें से उबार लें, तो उनकी वह बहुत बड़ी सफलता मानी जायगी। लेकिन मूलभूत उपाय यही है कि इस पद्धति को, जो 'बहुमतशाही' के रूप में काम कर रही है, बदलना होगा और सच्ची लोकशक्ति तथा लोकशाही की पद्धति स्थापित करनी होगी। वस्तुतः उसके लिए यहाँ की हालत भी बहुत अनुकूल है, क्योंकि पाश्चात्य लोकशाही की जड़ें यहाँ अभी जम नहीं पायी हैं। इंग्लैंड, अमरीका की-सी डेमोक्रेसी तक हम पहुँच सकें इसमें अभी काफी देर है। यहाँ अभी तो व्यक्ति, नेता, जाति, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि ही देखी जाती हैं। चुनाव बहुत शांति से भले ही हों, पर न तो पार्टी सिस्टम यहाँ जम पायी है और न जनता ही पार्लियामेण्टरी पद्धति की दृष्टि से उतनी जागरूक एवं शिक्षित है। ऐसी हालत में यहाँ आज की डेमोक्रेसी का रूपांतर करना कठिन नहीं है। अप्रत्यक्ष चुनावों से प्रारंभ करके ग्राम-ग्राम में अर्थ-शक्ति एवं राज्यशक्ति का विभाजन किया जा सकता है। लेकिन यहाँ की राज्यसत्ता दूसरे देशों से बहुत भिन्न नहीं है, वह सहसा लीक नहीं छोड़ सकती। अत यहाँ की जनशक्ति भी सबल बने, तो राज्यसत्ता को वह इसके लिए प्रवृत्त कर सकती है। वही दुनिया को भी राह दिखा सकती है।

'विश्व-जनशक्ति' का ही लक्ष्य हो

बहरहाल आज विश्व-जनमत, विश्व की नैतिक एवं शांतिवादी ताकतें, कोटि-कोटि जनता, जो असहायता ऐसे आक्रमणों के समय महसूस करती है, उसका उपाय गंभीरता से ढूँढ़ना होगा। अन्य भी कोई रास्ता ढूँढा जा सकता है। पर लक्ष्य 'विश्व-जनशक्ति' की स्थापना का ही हो, जो लोकसत्ता को वास्तविक अर्थों में कायम करके बहुमतवादी समूह-सत्ता को हटा सके।

लेकिन ये सब आहिस्ते होने वाली चीज़े हैं। आज मिस्र आक्रांत है, पीड़ित है और जीवन-मरण के संघर्ष में लगा है। उसकी बहादुरी, दिलेरी और स्वत्व-रक्षण की आकांक्षा के लिए सारी दुनिया की सहानुभूति उसे प्राप्त है। उसकी रक्षा के लिए यू० एन० ओ० और बांडुंग-राष्ट्रों को तुरंत पूरी ताकत लगा देनी है, अन्यथा दुनिया के माथे पर ऐसा दाग़ लग जायगा, जो इस शताब्दी का सबसे बड़ा कलंक होगा। बेवाँ महोदय ने इस अल्टीमेटम और आक्रमण की तुलना ठीक ही "हिटलरी तरीकों" से की है। पर उतनी असहायता आज तो हरगिज महसूस न होनी चाहिए।

भूदान-यज्ञ

१६ नवंबर सन् १९५६

३२ साल प्रवृत्ति-योग के बाद निवृत्ति-योग

(विनोबा)

हमें बहुत खुशी हो रही है कि यहां पर हमारा एक पूरा दिन निवास हुआ। ऐसे स्थानों में रह जाने की इच्छा होती है। यहां शांति मिलती है। लड़के-लड़कियों के साथ काम करने का मौका मिलता है, ज्ञान दे सकते हैं और पा सकते हैं। १९१६ से लेकर १९४८ तक लगातार ३२ साल हम ऐसे काम करते आये हैं। ३२ साल काम करने के बाद मनुष्य को निवृत्ति का हक होता है। हमने कुछ दिन कॉलेज का अध्ययन करने के बाद जनसेवा में ही जीवन बिताया है। उससे बड़ी शांति का अनुभव हुआ और ज्ञान मिला। ३२ साल ऐसा ही काम किया, जैसे एक कर्मयोगी जन-सेवक को करना चाहिए। हम कह सकते हैं कि हमारे रात-दिन चौबीसों घंटे उसी काम में गये। हमें याद नहीं कि हमने कभी, इतवार की छुट्टी ली हो, या तो रामनवमी के दिन हमारा काम रुका हो। कभी बीमार पड़ते थे, तो उतना समय छोड़ कर दिन भर लगातार वही काम हम करते थे। हम बहुत दफा कहते हैं कि भगवान् ने ३६५ दिन पैदा किये हैं, लेकिन लोग उसके ३०० या २५० दिन बनाते हैं।

आज आपने देखा कि हमने लड़कियों के साथ डेढ़ घंटे तक काम किया। हम समझते हैं कि यहां पर हम और कोई बात करते, कुछ निरीक्षण करते, व्याख्यान देते, उससे ज्यादा अच्छा काम आज हुआ है। हमने एक आनंद में से दूसरे आनंद में प्रवेश किया है। हम कह सकते हैं कि हमने कुल जिंदगी भर दुनिया में दुःख देखा ही नहीं और हम यह भी कहना चाहते हैं कि दुःख हमारे सामने अपना चेहरा कभी नहीं दिखायेगा। परंतु वे ३२ साल हमारी प्रवृत्ति के दिन थे। जो लोग इस तरह लगातार ३२ साल काम करते हैं, उन्हें काम से छुट्टी मिलती है, फिर उन्हें पेन्शन मिलती है, वे निवृत्त हो जाते हैं। इन ५-६ सालों से हमारी निवृत्ति ही चल रही है। यह हमारी निवृत्ति ही है, जो बारिश में, धूप में और जाड़े में चलती है। लोग हमसे पूछते हैं कि आप बीच में छुट्टी क्यों नहीं लेते हैं, तो हम उनसे कहते हैं कि छुट्टी तो काम से ली जाती है, निवृत्ति से कैसे छुट्टी हो सकती है? जब हम ३२ साल काम करते रहे, उस समय भी हमने छुट्टी नहीं ली। हमने किसी का वर्ग लिया, गीता-उपनिषद पढ़ाया, तो ३६५ दिनों में से एक दिन भी छुट्टी नहीं ली। जब हमने काम करते हुए भी छुट्टी नहीं ली, तो निवृत्ति से छुट्टी क्यों लेंगे?

कस्तूरबाग्राम (कोईंबतूर) २८-१०-'५६

सर्वोदय की दृष्टि

सरकारी उद्योग-नीति और सर्वोदयी उद्योग-नीति

प्रश्न :—अब जब कि सरकार ने भी यह तय कर लिया है कि देश में खादी और ग्रामोद्योग चलाया जाय, तो फिर आप लोग अलग से इस काम को क्यों करना चाहते हैं? आप लोग भी सरकार में शामिल हो कर सरकारी साधन का इस्तेमाल क्यों नहीं करते? सरकारी कर्मचारियों में सही दृष्टि नहीं होने के कारण जनता का करोड़ों रुपया बर्बाद हो रहा है। आपके शामिल होने से यह बर्बादी भी बच सकती है।

उत्तर :—यह सही है कि सरकार ने ग्रामोद्योग का काम करने का निश्चय किया है। लेकिन उसकी भूमिका भिन्न है। वह राष्ट्रीय अर्थनीति को केन्द्रीय पूँजी-वाद के आधार पर खड़ा करना चाहती है। केवल बेकारी की तात्कालिक परिस्थिति का उपाय करने के लिए ग्रामोद्योग का सहारा लेना चाहती है। अर्थात् अगर उसको केन्द्रीय उद्योग से यह काम होना संभव लगता, तो वह ग्रामोद्योग का काम नहीं करती।

लेकिन खादी और ग्रामोद्योग की मार्फत हम राजनैतिक तथा आर्थिक क्रान्ति करना चाहते हैं। हम शासनमुक्त तथा पूँजीमुक्त समाज कायम करना चाहते हैं। उस हेतु हम यह चाहते हैं कि पहले शासन का विभाजन हो, यानी ग्रामराज्य कायम हो। केन्द्रीय अर्थनीति के लिए अनिवार्य है कि उसका केन्द्रीय नियन्त्रण हो, और उसके लिए केन्द्रीय पूँजी एकत्र की जाय। अतः इस नीति के विकास के साथ-साथ केन्द्रीय शासन-तन्त्र तथा पूँजीवाद का विकास भी अनिवार्य है। ऐसी हालत में सरकार की ग्रामोद्योग-योजना हमारे उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती। यह अवश्य है कि उस योजना के कारण जनशक्ति का विकास होगा, जो शासन-मुक्ति तथा कांचन-मुक्ति के काम में आ सकती है। यही कारण है कि भिन्न भूमिका होने पर भी हम सरकारी काम के साथ सहयोग करते हैं।

प्रश्न :—लेकिन अभी हाल में पं० जवाहरलालजी ने खादी और ग्रामोद्योग-मण्डल को सन्देश देते हुए कहा है कि आज और भविष्य में भी भारत की अर्थव्यवस्था में घरेलू और ग्रामोद्योग का प्रमुख स्थान रहेगा। साथ-साथ उन्होंने यह भी कहा है कि "कुछ लोग अब भी घरेलू और छोटे उद्योगों तथा बड़े उद्योगों के परस्पर-विरोधी होने का तर्क उपस्थित करते हैं। वास्तव में इन दोनों में कोई विरोध नहीं है। केवल इन दोनों का ठीक-ठीक ढंग से उपयोग करना आवश्यक है। भारत के लिए जरूरी है कि देश की स्वतंत्रता बनाये रखने और प्रगति करने के लिए वह बड़े उद्योगों का विकास करे।" फिर तात्कालिक और स्थायी का प्रश्न कहाँ पैदा होता है? क्या आप लोग यह नहीं मानते हैं कि देश में बड़े उद्योग भी आवश्यक हैं?

उत्तर :—सरकार की जो भूमिका है, उसके अनुसार ही पण्डितजी ने कहा है। वे यह मानते होंगे कि बेकारी की समस्या भविष्य में भी रहेगी। इसलिए भविष्य में भी घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी। बड़े उद्योग और छोटे उद्योग में विरोध नहीं है, यह उन्होंने इसलिए कहा है कि वे केन्द्रीय शासन द्वारा नियंत्रण के सिद्धांत को मानते हैं। ऐसी हालत में शायद दोनों चलाये जा सकते हैं, क्योंकि छोटे तथा बड़े उद्योग दोनों केन्द्रीय नियन्त्रण में होने से, उनका परस्पर सामंजस्य रखना संभव है। लेकिन उससे शासनमुक्ति तथा पूँजी-मुक्ति की ओर नहीं बढ़ा जा सकता। अतएव पं० जवाहरलाल नेहरू ने जो कहा है, वह अपने दृष्टिकोण से सही कहा है। लेकिन जैसा कि मैंने अभी कहा है, हमारी दृष्टि भिन्न है।

हाँ, देश में बड़े उद्योग भी रहेंगे, ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन एक ही सामग्री के लिए दोनों उद्योग रहें, ऐसा हम नहीं मानते। जिन सामग्रियों के लिए कच्चा माल गाँव में उपलब्ध है और जिनकी प्रक्रिया गाँव की सामूहिक शक्ति से चलायी जा सकती है, उसके लिए बड़े उद्योग नहीं चाहिए। बड़े उद्योग केवल उनके लिए चाहिए, जिनके लिए कच्चा माल प्रकृति ने हमें केन्द्रित रूप में ही दिया है या जिसकी उत्पादन-प्रक्रिया के लिए केन्द्रित पूँजी और संगठन अनिवार्य है। ऐसा होने पर ही बड़े उद्योग और छोटे उद्योग में विरोध नहीं रहेगा। लेकिन सरकारी अर्थनीति ऐसी नहीं है। वे तो अन्न, वस्त्र जैसी मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भी केन्द्रित उद्योग चलाना चाहते हैं।

—धीरेन्द्र मजूमदार

खादीग्राम,
५ नवम्बर, १९५६

अहिंसा का मंगल द्वार सामने है

श्री वेंडेल विल्की ने जब 'एक दुनिया' नाम की अपनी किताब लिखी, उस वक्त किताब के आखिरी प्रकरण में लिखा कि या तो अब दुनिया एक दुनिया के रूप में रहेगी या बिल्कुल नहीं रहेगी। एक दुनिया तब मानी जायगी, जब एशिया और यूरोप का फर्क नहीं रहेगा और जब पश्चिम यूरोप और पूर्व यूरोप का फर्क भी नहीं रहेगा। चालीस बरस पहले तक भूगोल के दो हिस्से माने जाते थे। पूर्व गोलार्ध और पश्चिम गोलार्ध। यूराल पर्वत से पूर्व का पृथ्वी का हिस्सा पूर्व गोलार्ध समझा जाता था। लेकिन अब तो इंग्लैण्ड और फ्रान्स के प्रभुत्व के दायरे में जितने देश आते हैं और जो देश ग्रीस तथा रोम की परम्परा के अभिमानी हैं, उन्हीं देशों तक का भूगोल का हिस्सा पश्चिम गोलार्ध माना जाता है। एक दुनिया कायम होने में यह सबसे बड़ी रुकावट है। आज उसका परिणाम यह हो रहा है कि फ्रान्स और इंग्लैण्ड को रूस आक्रमणकारी बतला कर उन पर लानत पुकार रहा है और अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स रूस को हंगरी में आक्रमणकारी बतला कर उसकी भर्त्सना कर रहे हैं। इन दोनों के बीच संयुक्त राष्ट्र-संघ संस्था का हिंडोला झकोरे ले रहा है। इस हिंडोले के जो मुख्य चार पीलपाये हैं, वे ही हिलने लगे हैं। इसलिए सारी मानव-जाति की जीवनलीला समाप्त होने की आशंका दुनिया भर के सामान्य मनुष्य को हो रही है।

जहाँ तक आधुनिकतम वैज्ञानिक संहार-साधनों का ताल्लुक है, रूस और अमेरिका दोनों दुनिया के सबसे बलाढ्य देश हैं। वे और एक-दूसरे को मात करने के कार्यक्रम में व्यस्त हैं। दोनों शांति चाहते हैं और यह भी मानना चाहिए कि सच्चे दिल से शांति चाहते हैं। लेकिन शांति स्थापित करने के लिए जो कदम उठाने चाहिए, वे कदम उठाने की हिम्मत और नीयत दोनों में से एक में भी नहीं है। कारण यह है कि आज सभी राष्ट्रों की रणनीति में से वीरवृत्ति नष्ट हो गयी है। केवल शस्त्रवाद और युद्धवाद बाकी रह गये हैं। इसलिए शस्त्र और युद्ध में जो सांस्कृतिक मूल्य पुराने जमाने में था, वह अब समाप्त हो गया। आज जो सहअवस्थान (कोएक्झीज़स्टन्स) प्रत्यक्ष में दिखायी दे रहा है, वह इस दुनिया को उद्दण्ड राष्ट्रों की बटेरबाजी का अखाड़ा बना रहा है। जिसमें ज्यादह से ज्यादह अत्याचार करने की शक्ति हो, वही मीर है। रूस ने इंग्लैण्ड और फ्रान्स को धमकी दी कि 'तुम यह न भूलो कि मिस्र देश अगर खतम हो सकता है, तो तुम्हारा अपना मुल्क भी कोई अभेद्य दुर्ग नहीं है। मिस्र में अगर जले हुए मकानों के खंडहर शेष रह सकते हैं, तो वही दृश्य तुम्हारे अपने देश में भी दिखायी दे सकता है। इसलिए मिस्र जैसे देशों के साथ ज्यादती करने से बाज आओ।'

इस धमकी के बाद तुरंत ही कुछ परिणाम दिखायी देता है। इसका मतलब यह है कि जागतिक शांति की स्थापना के लिए जिस राष्ट्र-संघ की स्थापना की, उसकी अपीलों की अपेक्षा धमकी का परिणाम अधिक होता है। जब तक धमकी देने की जरूरत मालूम होती है और धमकी का असर होता है, तब तक शांति का वातावरण बनना असम्भव है। राष्ट्रसंघ के रूप में शांति का जो मन्दिर इन राष्ट्रों ने अपने हाथों से बनाया, उस मन्दिर में पूजा हिंसा की हो रही है। पुण्याहवाचन शांति का हो रहा है और आहुति भी शांति की दी जा रही है, इसलिए धमकियाँ और जवाबी धमकियों का धुआँ वायुमण्डल में व्याप रहा है। एक-दूसरे से भयभीत ये प्रचण्ड शस्त्रधारी राष्ट्र डर के मारे खुद भी मरेंगे और दूसरों को भी अपने साथ लेकर मरेंगे। जवाहरलालजी कहा करते हैं कि सहअवस्थान या सहमरण, ये दो ही विकल्प आज दुनिया के सामने हैं। लेकिन यह सहमरण नहीं, यह सहविनाश है। कुछ दो-एक महीने पहले अमेरिका के प्रेसीडेण्ट आइजनहावर ने कहा था कि अणु-अस्त्रों ने पहली बार मनुष्य के हाथ में अपना इतिहास समाप्त करने की शक्ति दी है। दुनिया के शस्त्रोन्मत्त राष्ट्र आज मानवीय इतिहास का अन्त करने पर तुले हुए मालूम होते हैं। प्रलय के कगारे पर खड़े हुए एक-दूसरे को अतल पाताल में ढकेलने के लिए एक-दूसरे से लिपट रहे हैं। दोनों पक्षों के पैर लड़खड़ा रहे हैं और जमीन से उचट रहे हैं। उन्माद के कारण दोनों के होश गायब हैं।

उधर रूस भी हंगरी में अपने हस्तक्षेप का समर्थन करने में नहीं चूकता। उसे हंगरी के उद्धार की बहुत बड़ी चिन्ता है। एक तरफ तो वह कहता है कि क्रांति का आयात और निर्यात नहीं हो सकता और दूसरी तरफ अन्य देशों के अन्तर्गत मामले में दस्तंदाजी वह क्रान्ति के नाम पर करता है। इंग्लैण्ड-फ्रान्स आन्तर्राष्ट्रीय अधिकारों की सुरक्षा की दुहाई देते हैं और रूस जागतिक क्रांतिवाद का झण्डा बुलन्द रखने का दम भरता है। छोटे-छोटे राष्ट्रों के लिए स्वयंनिर्णय का सिद्धान्त हवा हो गया। वे क्रान्ति भी अपनी मर्जी से नहीं कर सकते। छोटे-छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता शस्त्रास्त्रों के आधार पर सुरक्षित नहीं रह सकती। अणु-अस्त्रों से छोटे राष्ट्र भी बड़े से बड़े राष्ट्र को छिन्न-विच्छिन्न कर सकते हैं। लेकिन अस्त्रों से अपना संरक्षण कोई नहीं कर सकता। आज के युद्धशास्त्र में बचाव की आण्विक कोई योजना ही नहीं है। यह युद्धशास्त्र संहार का दूत है। इसलिए श्री नासिर को कहना पड़ा कि हम मर मिटेंगे, लेकिन अत्याचार के सामने सिर नहीं झुकायेंगे। वह वीरता शस्त्र के भरोसे नहीं ठहर सकती। वह तो आत्मबल के ही आधार पर अपना जौहर दिखा सकती है। आज की युद्धनीति ने जहाँ एक तरफ हमको सार्वत्रिक संहार और सहविनाश के कगारे पर खड़ा कर दिया है, वहाँ दूसरी तरफ अहिंसा के मंगल द्वार का रास्ता भी खोल दिया है। हम कौनसा रास्ता लेंगे, यह मानवीय विवेक पर निर्भर है। विवेक अगर साबित हो तो मार्ग स्पष्ट है।

काशी, ११-११-५६

—दादा धर्माधिकारी

इतिहास की पार्श्वभूमि में 'स्वदेशी' का अर्थ

(उत्तरार्ध)

(विनोबा)

दुनिया में तनाव भरा पड़ा है और युद्ध की तलवार सिर पर लटक रही है। दो-चार आदमी को ही उसका भला-बुरा करने का अधिकार है। उनका दिमाग बिगड़ा, तो पुनः लड़ाई शुरू हो सकती है। हम भगवान् से अब यह प्रार्थना नहीं करते कि हमें सद्बुद्धि दें, बल्कि कहते हैं, हे भगवान्, सद्बुद्धि ईडन को दो, आइजनहोवर को दो, बुल्गानिन को दो आदि, क्योंकि भगवान् मुझे बुरी बुद्धि दे, तो दुनिया का नहीं, मेरा बिगड़ेगा। लेकिन इनका दिमाग बिगड़ा, तो दुनिया ही बिगड़ी, इसलिए हे भगवान्, इन चार-पाँच परमेश्वरों को अच्छी बुद्धि दो।

आज दुनिया की रचना ऐसी बन गयी है कि एक जीच इधर जाती है और एक चीज उधर से इधर आती है। कब बैलन्स बिगड़ेगा, कह नहीं सकते और जहाँ युद्ध शुरू हुआ, तो न चाहते हुए भी हिंदुस्तान को वर्ल्ड वार में शामिल होना पड़ेगा, क्योंकि वह वर्ल्ड में शामिल है। तब उन शहरों की और शहरों की मिलों की क्या हालत होगी? इसलिए रोजगार की चीजें बाहर खरीदना खतरनाक है। यह अंबर चरखा है। उसमें अच्छाई यह है कि वह स्वयमेव कातता है। यंत्र की अच्छाई इसमें मानते हैं कि वह यंत्र स्वयमेव चले। समाज रूपी यंत्र भी तब अच्छा माना जायगा, जब वह स्वयमेव चलेगा। हर जगह का अपना इंतजाम, अपना खाना-कपड़ा लोग स्वयं कर लें और जो रोजमर्रा की चीजें नहीं हैं जरूरत पड़ने पर खरीद लें, यही अच्छी रचना मानी जा सकती है। मैं इस विचार को पसंद नहीं करूँगा कि स्विट्जरलैंड में अगर अच्छी घड़ियाँ बनती हैं, तो हम यहाँ फिर वे क्यों बनायें? इतना ही कहूँगा कि नाहक घड़ी न पहनें।

आज तो हर चीज में मिलावट है, यहाँ तक कि दवाई में भी। बड़ी भयानक हालत है। निष्ठुरता की कोई सीमा ही नहीं। संतोष इतना ही है कि यह हृदय की निष्ठुरता नहीं है, आर्थिक और सामाजिक रचना का परिणाम है। सारा मिश्रण इसलिए होता है कि लोग स्वदेशी धर्म को नहीं पहचानते। अगर मनुष्य के हृदय की यह कठोरता होती, तो उसके लिए कितनी घृणा बढ़ जाती? इतना बुरा आचरण आज वह गलत रचना के कारण कर रहा है। इसलिए जहाँ हम कर सकते हैं, वहाँ अपनी चीज हम पैदा करें, अपना इंतजाम हम करें और जरूरत पड़ने पर मदद लें। वह देने या लेने में कोई संकोच या पाप नहीं है, परोपकार है। उपकार शब्द में ही खूबी है। उप याने 'अल्प' थोड़ी-सी मदद को उपकार कहते हैं। उतना हम दूसरों से लें और दूसरों को दें। कोई पंगु ही हो, तो उसे भी कंधे पर उठायेंगे। वह सब प्रेम-कर्तव्य होगा। प्रेम और करुणा क्या बताती है? नजदीक वालों की बनायी हुई चीज न लेकर दुनिया की लेना निष्ठुरता है, संकुचितता है। स्वदेशी में मानसिक संकोच नहीं। सारे मानव हमारे भाई हैं, लेकिन कोई पंगु नहीं है, न कोई पंगु बने।

इस तरह यह विचार संकुचित—सेल्फसफिशयन्सी—का नहीं, करुणा का है। स्वदेशी के पुराने आंदोलन के सफल न होने का कारण यह है कि शुद्ध और निर्मल रूप में लोगों के पास नहीं पहुचा, जो कि गांधीजी ने पहुँचाया।

ऋग्वेद में अग्नि का वर्णन है कि अग्नि दूर का देखता है और पालन अपने घर का करता है। यही दृष्टि हमारी होनी चाहिए। प्रेम और विचार बहुत व्यापक हो सकते हैं, लेकिन हाथ व्यापक नहीं होते। इसलिए वे नजदीक की ही सेवा कर सकते हैं।

यही स्वदेशी धर्म है। हमें सारी दुनिया से प्रेम करना है। किसी प्रकार भेद-भाव नहीं करना है। हम विश्वनागरिक हैं। स्वदेशी धर्म का अर्थ है—सेवा के लिए नजदीक का क्षेत्र और प्रेम तथा मिलन के लिए सारी दुनिया। उसमें वर्ण, जाति, गाँव, प्रान्त, देश, धर्म आदि का अभिमान नहीं आता है। इन चीजों से स्वदेशी टिकेगी नहीं। उदार दृष्टि से ही स्वदेशी को समझ सकते हैं।

वैकुंठभाई सूत्रवत् बोले। हमें लगा कि उस पर भाष्य करना ही चाहिए।
(गांधीनगर, तिरुपुर, १७–१०–५६)

विनोबा-प्रवचन-सार

पाँच-छः साल पहले की घटना है। हमारे पास मानपत्र के ढेर इकट्ठे हुए थे। हम ट्रेन में गोदावरी नदी पर से जा रहे थे। जब पुल आया, तब काँच लगाये हुए उन सब मानपत्रों के ढेर को हाथ से उठा कर नदी में डाल दिया। क्या हम एक-एक गाँव जायँगे और लोग एक-एक काँच का मानपत्र दिया करेंगे, तो वह हम सँभाल रखेंगे ? कौन मनुष्य आया है, उसकी सेवा किस प्रकार करनी चाहिए, उसकी भी अकल होनी चाहिए। जो मनुष्य १५ हजार मील चल कर आया होगा, वह क्या मानपत्र लेने के लिए आया होगा ? उसे तो दानपत्र चाहिए, मानपत्र नहीं।
(सुरमंगलम्, २६-७-'५६)

रुपया पिशाच है

एक भाई ने सौ रुपये का सम्पत्तिदान देने के लिए कहा। रुपयों को तो हम पिशाच समझते हैं। आज एक लड़की ने एक रुपया दिया। पहले मुझे लगा कि वह फूल दे रही है, पर पैसा देखा, तो हमने फेंक दिया। जिनके पास पैसे होते हैं, उनकी अकल खो जाती है। इसलिए पैसे का उपयोग समाज की सेवा में कर डालना चाहिए। इसलिए हमको रुपये नहीं चाहिए, हमको हिस्सा चाहिए। हर घर में दरिद्रनारायण का हिस्सा है। जो लोग यह हिस्सा कबूल नहीं करेंगे, वे मूर्ख हैं। अगर वे अपना हित समझते हैं, तो हमारा हिस्सा जरूर कबूल करेंगे। वह हिस्सा विनोबा को अपने लिए नहीं चाहिए।
पागलपट्टी, सेलम, २६-७-५६।

अध्यात्म और भौतिकता भिन्न नहीं है

एक भाई ने चर्चा में कहा कि आज लोग भौतिक उन्नति की तरफ ध्यान दे रहे हैं, परन्तु आध्यात्मिक उन्नति, इहलोक की यात्रा सुख से करने की तरफ ध्यान नहीं देते। हमें उनका कहना अच्छा लगा। मान लीजिये हम किसीको पीटते हैं, तो हम इहलोक की यात्रा सफल नहीं करते। हम भी उसी तरह पीटे जायँगे। फिर इसी तरह झगड़े चलते रहेंगे। एक-दूसरे को सताते रहेंगे, तो सत्य नहीं रहेगा, धर्म खत्म होगा, परमेश्वर की भक्ति खत्म होगी, परलोक खत्म होगा। इससे दोनों लोक की यात्रा सफल नहीं होगी। लेकिन अगर हम एक-दूसरे के प्रति त्याग और प्रेम की वृत्ति बढ़ाते हैं, तो इहलोक की यात्रा सुधरेगी, धर्म और पारमार्थिक कार्य भी सुधरेगा। भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक उन्नति, दोनों साथ ही सधती है। दोनों मिल कर एक ही चीज है, ऐसा हम समझते हैं।

अन्याय से अर्थ-संचय करने से एक व्यक्ति का स्वार्थ सधेगा, समूह सुखी नहीं होगा, भौतिक उन्नति नहीं होगी। इस वास्ते जीवन के लिए जो चाहिए, वही आत्मोन्नति के लिए चाहिए। तमिल भाषा में घर को भी "विडु" और मोक्ष को भी "विडु" कहते हैं। याने इहलोक के लिए और परलोक के लिए एक ही वस्तु की जरूरत है। शरीर को "मेरा" कहते हैं और सत्य को भी "मेरा" कहते हैं। धर्म-विहीन व्यवहार से अर्थवृद्धि नहीं होती, विनाश ही होता है। रावण और हिटलर ने धर्म की परवाह नहीं की, भौतिक उन्नति के शिखर पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन आखिर सर्वनाश हुआ। इसलिए धर्म और अर्थ अलग मानना गलत है।

भूमि-वितरण से दूसरों के लिए त्याग करने की वृत्ति बढ़ेगी। दान की भूमि जोतने वाले के बच्चों को लगेगा कि गाँव ने जमीन दी, तो हमें भी गाँव की सेवा करनी चाहिए। इस तरह से सद्गुण बढ़ता है, परमार्थ सधता है और इहलोक भी सधता है। सद्गुणों का विकास याने ईश्वर की भक्ति। सत्य, प्रेम, करुणा यही ईश्वर के गुण हैं। इन गुणों का विकास जो अपने हृदय में करता है, वह साक्षात् ईश्वर-दर्शन पाता है। अन्न-उत्पत्ति होगी, तो समाज सुखी होगा। ज्ञानी चाहते हैं कि धर्म का, आत्मा का विकास हो। ये दोनों प्राप्त करने का उपाय है गुण-विकास। इधर आत्मज्ञान, परलोक और उधर इहलोक, बीच में गुण खड़े हैं। सद्गुणों का विकास होगा, तो दाहिना हाथ आत्मज्ञान और बायाँ हाथ इहलोक होगा।
(मेनासी, सेलम, ३०-७-'५६)

वहाँ मन का क्या चलेगा ?

इन दिनों हम ज्यादा जोर मतभेद बढ़ाने में नहीं देते हैं, मतमेद खत्म करने में, मिटाने में देते हैं। मनुष्य का जीवन बहुत व्यापक है, उसके अनेक अंग हैं। उसके अनेक प्रश्न हैं। तरह-तरह के प्रश्न हैं और उसे एक से अधिक तरह से सोचा जा सकता है, इसलिए भिन्न-भिन्न रायें होती हैं। परन्तु यह सारे भिन्न-भिन्न अभिप्राय इस विज्ञान के युग में अत्यंत गौण है। कोई नक्षत्र बड़ा है, कोई नक्षत्र छोटा है, यह भेद कब होता है ? यह भेद रात के अन्धकार में होता है, सूर्य-नारायण के प्रकाश के बाद ये भेद नहीं रहते हैं। इसलिए विज्ञान के जमाने में मतमेदों का कोई मूल्य नहीं है। मतभेद मन के कारण होते हैं, मन अनेक संस्कारों से बना हुआ रहता है और जिस प्रकार की परिस्थिति होती है, जैसे संस्कार होते हैं, उसके अनुकूल मनुष्यों के मन बनते हैं। वह चाहे या न चाहे, लेकिन विज्ञान की माँग है कि मनुष्य को अपने मन अलग करके अर्थात् अपने कुल मतभेदों को अलग करके सोचना चाहिए। भिन्न-भिन्न अर्थों के भिन्न-भिन्न अर्थ प्रायः विज्ञान में डूब जाते हैं। अभी कच्छ में भूकम्प हुआ था, उस वक्त किसका क्या मतभेद टिका ? सब डूब गये उस आपत्ति में। जैसे आपत्ति में मतभेद डूब गये, उससे भी अधिक सामर्थ्य विज्ञान में मतभेदों को डुबाने का है। विज्ञान बता रहा है कि हम सारे जुड़े हुए हैं। हम अन्दर से जुड़े हुए हैं, यह आत्मज्ञान ने पहले ही बताया था, लेकिन बाहर से जुड़े हुए हैं, यह विज्ञान बता रहा है। एक जमाना था, जब मानते थे कि समुद्र दो देशों के बीच रहता है, तो वह दोनों देशों को अलग करता है। आज यह माना जाता है कि दो देशों के बीच में जो समुद्र होगा, वह उन दो देशों को जोड़ता है। राष्ट्रों को अलग करने वाला समुद्र दोनों राष्ट्रों को जोड़ रहा है। अमेरिका समझता है कि चीन और जापान मेरे पड़ोस के देश हैं, जिसमें सिर्फ आठ हजार मील लम्बा समुद्र है। उसने दो देशों को जोड़ दिया। दिन-ब-दिन किसान आगे बढ़ रहा है। आप हमारे सामने बैठे हैं और हम आपके सामने बैठे हैं, बीच के आकाश ने हमें जोड़ दिया। आज हम यहाँ बोलते हैं, हमारी आवाज कुल दुनिया में जा सके, ऐसे औजार निकले हैं, यह सारा आकाश हमारे शब्दों को वहन करने वाला साधन है, उन्हें रोकने वाला नहीं। जहाँ आकाश और समुद्र जैसे तत्त्व दो राष्ट्रों को अलग करते थे, वहाँ वे दो राष्ट्रों को जोड़ने वाले साबित हुए हैं, तो वहाँ मन का क्या चलेगा ?
(धर्मपुरी, सेलम, ४–८–'५६)

नाहं बिभेमि

हम सब भूमि-पुत्र हैं, इसलिए जमीन की मालकियत खत्म करो। यह काम पहले कौन करेगा ? जो छोटे-छोटे मालिक हैं, वे ही इस काम को पहले करें। वे अगर पहले करते हैं, तो नैतिक ताकत बनेगी। वह ताकत लेकर हम बड़े मालिकों के पास पहुँचेंगे। उस नैतिक शक्ति का असर उनके दिल पर होगा, वे पिघल जायँगे। यह नहीं होगा कि हर गाँव के बड़े लोग इस तरह पिघल जायँ, क्योंकि परमेश्वर अनेक रूप लेता है। अनेक अवतार लेता है—कभी नर्म, कभी सख्त, कभी करुणावान, तो कभी कठोर। लेकिन आप जानते हैं कि प्रह्लाद के सामने नरसिंह पिघलता था। प्रह्लाद उसका रूप देख कर घबड़ाया नहीं। जहाँ नारद और लक्ष्मी भी घबड़ा गये थे, वहाँ प्रह्लाद नहीं घबड़ाया। उसके मुख से स्तुति-स्तोत्र निकल पड़े। प्रह्लाद गाने लगा, 'नाहं बिभेमि'–मैं नहीं डरता' वैसे कोई भी उग्रावतार सामने आयेगा, तो आप डरेंगे नहीं।

ग्राम-प्रदक्षिणा का मर्म

कोई मन्दिर में चारों ओर घूम कर प्रदक्षिणा करते हैं और उसको भक्ति समझते हैं। लेकिन प्रदक्षिणा से क्या होगा ? हजार प्रदक्षिणा होगी, तो उसका पाँच मील का घूमना हुआ। बाबा रोज दस-बारह मील चलता है, तो उसकी हजार दो हजार प्रदक्षिणा होती होगी, ऐसा बाबा समझता है। बाबा की यात्रा केवल लोकसेवा के लिए हो रही है। बाबा की यही भावना है कि यह यात्रा है, प्रदक्षिणा है। हमारे सामने जो बैठे हैं, वे मूर्तियाँ हैं। आपका दर्शन हमें होता है। हम समझते हैं कि ये सारे ईश्वर के रूप बैठे हैं, लेकिन कोई रूप है फटे कपड़े वाला, तो कोई रूप है, जिसकी हड्डी बाहर निकल गयी है, किसी रूप का पेट अन्दर चला गया है। हम चाहते हैं कि ये सारे रूप प्रसन्न, निर्मल, सुन्दर और परिपुष्ट हो जायँ। इसीलिए यह भूदान, संपत्तिदान, ग्रामदान आदि हो रहे हैं। इसलिए बाबा यात्रा करता है, तो समझता है कि मंदिर के आस-पास प्रदक्षिणा हो रही है। गाँव में प्रदक्षिणा

के लिए सुन्दर जगह पसन्द करके गाँव के सज्जन लोगों को ग्रामप्रदक्षिणा करनी चाहिए। सुबह लोगों को जगाने के लिए 'तिरुवाचकम्' में से स्तोत्र गाते जाना चाहिए।

(पलयमपुदुर, सेलम, १८-८-'५६)

इस हाथ दे, उस हाथ ले

सच्चा धर्म प्रत्यक्ष अनुभव का होता है। किसी प्यासे मनुष्य को आपने पानी पिलाया, तो उसको तो आनन्द होगा ही;—लेकिन आपके दिल को भी आनन्द होगा। अगर पिलाने वाले के हृदय में समाधान होता है, तो समझ लेना कि वह उत्तम धर्म है। आपने अभी गुड़ खाया, तो वह अभी मीठा लगेगा। मरने के बाद वह मीठा थोड़े ही लगेगा। वैसे धर्माचरण किया, तो शान्ति का अनुभव अभी होना चाहिए। धर्म का फल उधार नहीं होता वह नगद है। आपने अभी खाया, तो तृप्ति का अनुभव इसी क्षण आया।

भागवत् में लिखा है कि एक कौर मुँह में लेते जाते हैं, उसके साथ तुष्टि-पुष्टि का अनुभव आता है। जैसे पानी पिलाने का साक्षात् आनन्द अनुभव होता है, वैसे ही धर्माचरण का साक्षात् अनुभव आता है कि आनन्द हुआ। वह आनन्द उधार नहीं है। इसलिए हमारा दावा है कि भूदान-यज्ञ में अत्यन्त उच्च, शुद्ध और स्वच्छ धर्म का प्रचार हो रहा है। उसमें खालिस धर्म यानी जिसमें कोई निश्चय न हो, जिसका परिणाम उसी क्षण आप अनुभव करें, ऐसा धर्म है।

क्या ईश्वर मैजिस्ट्रेट से बढ़कर है ?

एक तो स्नान को वड़ा धर्म कहते हैं और दूसरा धर्म भस्म लगाने का सिखाते हैं। स्नान न करने से तो शरीर गन्दा रहेगा, लेकिन भस्म न लगाने से क्या होगा ? तो कहते हैं कि ईश्वर नाराज हो जायगा। छोटी-छोटी बातों में ईश्वर नाराज हो जायगा, गुस्सा करेगा, दंड करेगा। तो क्या ईश्वर डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट है ? सन्त ईश्वर को अपनी माँ और बाप की तुलना से पहचानते हैं। माँ का इतना प्रेम है, तो ईश्वर का कितना अधिक होगा ? माँ की क्या अकल है, फिर भी इतना प्यार करती है, तो जो ज्ञानी है, वह कितना प्रेम करेगा ? इस तरह से माँ के प्रेम पर से ईश्वर के प्रेम का अन्दाज लगा कर ईश्वर को परम प्रेममय समझ करके "अन्बे शिवम्" (प्रेम ही ईश्वर है) नाम दे दिया। लेकिन ये लोग तो कहते हैं कि भस्म नहीं लगायेंगे, तो ईश्वर दण्ड देगा। पुलिस से ज्यादा दण्ड देने का अधिकार डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट में होता है और ईश्वर तो सबसे वड़ा अधिकारी है, तो वह तो कितना दण्ड करेगा ? फिर उसको 'अन्बे शिवम्' कहने के बदले 'दण्डनै शिवम्' कहना पड़ेगा। जरा-सा अपराध हुआ, तो ईश्वर मारेगा, पीटेगा, सजा देगा। यह सब मूढ़ श्रद्धा है।

(जलकंठपुरम्, सेलम, १९-८-५६)

ऐसी आस्तिकता से नास्तिकता भली !

सच्चा धर्म यह है कि अपने मन को शिक्षा दें। पहले दूसरे की चिन्ता करें, फिर अपनी करें। घोड़े का कोई धर्म नहीं है, क्योंकि वह दूसरे की चिन्ता करना नहीं जानता है। अगर मनुष्य चाहे तो वह सोच सकता है, इसलिए मनुष्य के लिए धर्म है। धर्म के नाम से कुछ मूढ़ श्रद्धा रखने से समाज को कोई तृप्ति नहीं हो सकती। लोग कहते हैं कि यह कलियुग है और कलियुग में लोग पापी होते हैं, लेकिन जिसको भूदान की महिमा मालूम होगी, वे जानते होंगे कि राजाजी ने जब कावेरी नदी के नजदीक की ज़मीन का बँटवारा किया, तब कहा था कि "इस समय कावेरी नदी के किनारे की ज़मीन लोग दान में देंगे, यह ख्याल हमारे बाप-दादाओं को भी कभी आया नहीं होगा।"

भूदान-यज्ञ के जरिये धर्म-संस्थापना हो रही है। हमने जान-बूझ कर 'संस्थापना' शब्द का उच्चारण किया। जहाँ धर्म खत्म ही हुआ है, वहाँ उसकी पुनः स्थापना करनी होती है। यह बहुतों को विचित्र लगेगा कि हिंदुस्तान जैसे देश में जहाँ धर्म की भावना इतनी है, वहाँ बाबा ऐसा विचित्र क्यों बोलते हैं ? भारत देश में धर्म-भावना जरूर है उसका हमको गौरव भी है। उसका हमको बल भी मिला है। लेकिन उस धर्म-भावना में मूढ़ श्रद्धा मिली हुई है। इसलिए वह धर्म वीर्यहीन हो गया है।

आप मुझे क्षमा करियेगा, परन्तु इससे हम नास्तिकता बेहतर समझते हैं। हम अपने को आस्तिक समझते हैं। बचपन से ईश्वर-भक्ति का हम को प्रेम है। हम हमेशा सन्तों के ग्रन्थों का अध्ययन करते आये हैं—फिर वह चाहे तमिल का हो या कन्नड़ का हो। लेकिन जो मूढ़ और ढोंगी भक्ति हिन्दुस्तान में धर्म के नाम से चलती है, उससे हम नास्तिकता बेहतर समझते हैं। हम जानते है कि हिन्दुस्तान में कितनी ही बहनें और भाई सचमुच में आस्तिक हैं, क्योंकि उनके हृदय में करुणा है। यह आस्तिकता की हमारी कसौटी है। जिसके हृदय में करुणा है, वह आस्तिक है। यद्यपि हिन्दुस्तान की धर्म-श्रद्धा मूढ़-श्रद्धा बन गयी है, धर्म सूख गया है, फिर भी करुणा का स्रोत सूखा नहीं है। उस करुणा को जाग्रत करने का काम हम कर रहे हैं।

(जलकंठपुरम्, सेलम, १९-८-५६)

जब तक हृदय में प्रकाश नहीं…

पाप-क्षय के लिए पुण्य-शक्ति का उदय होना चाहिए। पुण्य-शक्ति का उदय तब होगा, जब हमारा आचरण सुधरेगा। हमारा आचरण तब सुधरेगा, जब हमारे दिल में कुछ प्रकाश पड़ेगा। जब तक हृदय में प्रकाश नहीं पड़ता, तब तक न आचरण सुधरता है, न पुण्य-शक्ति बनती है, न पाप-क्षय होता है। इसलिए हिन्दुस्तान में धर्म-भावना तो बहुत है, लेकिन बुद्धि में प्रकाश नहीं है। उनको कहा गया है कि गंगा-स्नान करोगे, तो धर्म होगा, तो वे गंगा-स्नान करते हैं। उनको कहा गया है कि स्तोत्र-पाठ करो, मरने के बाद श्राद्ध करो, तो धर्म होगा, तो वे स्तोत्र-पाठ करते हैं और श्राद्ध करते हैं; परन्तु उनको यह नहीं समझाया गया है कि जब तक हृदय में प्रकाश नहीं होता है, तब तक धर्म नहीं होता।

(पेरिय पुलीउरम्, कोइंबतूर, २४-८-'५६)

हम निराश नहीं हुए

कल सुबह के ही पड़ाव की बात है कि वह बड़ा मजबूत गाँव था। कुछ लोगों ने दिल बहुत कड़ा, मजबूत बना रखा था। हमने उनको समझाने की कोशिश की कि गाँव में सब मिल-जुल कर रहें। भूमिहीन के लिए भूमि दे दें, तो प्रेम बढ़ेगा और द्वेष-झगड़ा नहीं होगा। उन्होंने कहा कि हमारे गाँव में भूमिदान की कोई जरूरत नहीं है, हमारे यहाँ कोई झगड़े नहीं हैं। हमने अपने मन में सोचा कि क्या प्रेम करने के पहले झगड़े की जरूरत है ? तो उन्होंने कहा कि झगड़े नहीं हैं, इसलिए भूदान की जरूरत नहीं है और आपके ही कारण हमारे गाँव में झगड़े हो जायँ, तो हो जायँ। उन्होंने हमारे मित्र से यह सारा कहा था। हमने अपने मन में कहा कि अगर आपके गाँव के लोग सुख से रहते हैं, तो हमारा क्या बिगड़ता है ? यह सोच कर ढाई बजे दूसरे पड़ाव के लिए रवाना हो गये। उस गाँव में हमारे जाने का कोई लाभ नहीं हुआ। लेकिन हम निराश नहीं हुए, क्योंकि उन्होंने 'गीता-प्रवचन' खूब खरीदे थे। शायद 'गीता-प्रवचन' पढ़ कर हृदय में कुछ बातें पच जायँ। कुछ लोगों की आँखों पर भगवान् ने पट्टे बाँध रखे हैं, उससे भगवान् ही उनको छुड़ा सकते हैं। तुलसीदास ने दो ही शब्दों में वह बात बतायी है—"जोइ बाँधै सोइ छोरै"—जो बाँधता है, वही छोड़ता है। तुलसीदास खूब गाता है, लोगों को खूब समझाता है; परन्तु मन में समझता है कि उन्हीं की ग्रंथि छूटेगी, जिनकी ग्रंथि छुड़वाना भगवान् चाहता है, हम तो निमित्तमात्र हैं।

(धवलपेट, कोइंबतूर, २६-८-'५६)

संघर्ष से सर्वनाश होगा

सब लोग सर्वोदय चाहते हैं, लेकिन ऐसे सर्वोदय-विचार में विचार-दोष यह रहता है कि सबका भला सब चाहते हैं, फिर भी 'सबसे पहले मुझे'—यह भावना रहती है। ऐसा कहने से टक्कर भी होगी और टक्कर से, संघर्ष से, सर्वोदय नहीं आयेगा, सर्वनाश ही बढ़ेगा। इसलिए सर्वोदय आज सब चाहते हैं, फिर भी रास्ता ऐसा ग्रहण किया जाता है, जिसमें संघर्ष ही होता है। इस वास्ते सर्वोदय-विचार हम मन में चाहते हैं, इतना ही काफी नहीं है, बल्कि हमारे चाहने में जो कमी रह गयी है, वह हमें पूरी कर लेनी चाहिए। हमको यह इच्छा रखनी चाहिए कि सबका भला पहले हो, बाद में मेरा हो। मैं घोड़ा और बैल नहीं हूँ, जो पहले अपना सोचू। मैं मनुष्य हूँ, मैं सर्वोदय का सेवक हूँ, मैं सर्वोदय चाहता हूँ, इसलिए मेरी चिन्ता लोग करेंगे और लोगों की चिन्ता मैं करूँगा।

(गुरुवरेड्डियार, कोइंबतूर, २९-८-५६)

तमिलनाड की पदयात्रा से

(निर्मला देशपांडे)

विनोबाजी का निवास अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में छः दिनों तक तिरुपुर में था, जहाँ पर तमिलनाड खादी-ग्रामोद्योग-संघ का संमेलन चल रहा था। संमेलन के लिए इस प्रदेश के सब रचनात्मक कार्यकर्ता, अ० भा० खादी बोर्ड के अध्यक्ष श्री वैकुंठभाई मेहता तथा अन्य प्रमुख सदस्य आये थे। संमेलन में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव हुए और तमिलनाड में ग्रामदान तथा ग्रामसंकल्प के कार्यक्रम पर सबकी शक्ति लगाने का निश्चय हुआ। "तिरुपुर" दक्षिण भारत का सबसे बड़ा खादी-उत्पादन-केन्द्र है। तिरुपुर के इर्दगिर्द कोइम्बतूर जिले में गाँव-गाँव में चरखे तथा करघे दिखायी देते हैं। यहाँ पर अंबर चरखे का प्रचार तेजी से हो रहा है। इसके आगे खादी-कार्यकर्ता विनोबाजी के मार्गदर्शन के अनुसार ग्रामसंकल्प का आन्दोलन चलायेंगे। अभी तक करीब दस गाँवों ने ग्रामसंकल्प लिया है कि "हम अपने गाँव की कती और बुनी हुई खादी ही पहनेंगे, गाँव में मिल का कपड़ा नहीं आने दगे, गाँव के सब भूमिहीनों को जमीन देंगे, गांव में नयी तालीम की शाला चलायेंगे और गांव में जातिभेद का निर्मूलन करेंगे।" वह दृश्य बड़ा ही आकर्षक होता है, जब गांव-गांव के लोग खड़े होकर संकल्प-पत्र का सामहिक पठन करते हैं।

शिक्षित लोग विद्यादान दें

मुट्टुपाळयम् में खादी-बुनकरों का एक संमेलन हुआ, जिसमें बुनकरों ने तय किया कि हम खादी का सूत ही बुनेंगे, कुटुम्ब में खादी ही पहनेंगे और ग्रामसंकल्प के लिए प्रयत्न करेंगे। बुनकरों ने सरकार की बिजली के करघों को बढ़ावा देने की नीति का जो निषेध किया, उसके बारे में विनोबाजी ने बुनकरों को आदेश दिया कि "आपको गाँव-गाँव में हजारों सभाएँ करके इस तरह निषेध करना चाहिए, लोकराज्य में अपनी आवाज उठाना आपका कर्तव्य हो जाता है। परंतु निषेध के साथ-साथ संकल्प की भी जरूरत है।" उसी सभा में एक शिक्षित बुनकर ने प्रतिदिन दो घंटे का समय अनपढ़ों को पढ़ाने के लिए दान दिया। उसकी सराहना करते हुए विनोबाजी ने कहा—"इस तरह देश का हर शिक्षित व्यक्ति निश्चय करेगा कि मैं दस लोगों को पढाऊँगा और अपना एक घंटे का समयदान देगा, तो दस साल के अंदर कुल देश को शिक्षित बनाया जा सकता है और एक कौड़ी का खर्च आये बिना सारा देश पढ़ा-लिखा बन सकता है। यही काम अगर सरकार के जरिये करना होगा, तो अरबों रुपये का खर्च होगा और उसके लिए बीसों साल लगेंगे। इसलिए हम चाहते हैं शिक्षित लोग प्रेम से विद्यादान दें।"

महाराष्ट्र से आये हुए एक भाई ने रास्ते में लोकनीति तथा आज की राजनीति के बारे में पूछा कि "यद्यपि हम लोकनीति और शासन-मुक्त समाज की स्थापना में विश्वास करते हैं, फिर भी हमें लगता है कि उसकी स्थापना में कुछ विलंब होगा। इसलिए बीच के जमाने में, जब कि लोकशाही का ढाँचा बना हुआ है, सत्ताधारी पक्ष की निरंकुशता को रोकने की दृष्टि से और उसमें सुधार लाने की दृष्टि से एक मजबूत विरोधी पक्ष का होना आवश्यक है।" इस पर विनोबाजी ने कहा–"जो लोग शासनमुक्ति में विश्वास करते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि अगर हम समझते हैं कि शासनमुक्ति आने में पचास साल लगेंगे, तो यह बीच का काल और लंबा हो जायगा और उसके आने में दो-सौ साल लगेंगे। लेकिन हम अगर ऐसा विश्वास रखते हैं कि शासनमुक्ति अगले साल आ सकती है, हम ला सकते हैं, तो हम इस बीच के काल को छोटा बनाते हैं। हमें यह भी सोचना चाहिए कि आज की राजनीति में पड़ कर, चाहे अच्छे उद्देश्य से भी क्यों न हो, हम उस बीच के काल को बढ़ाते हैं या छोटा बनाते हैं। फिर अगर ध्यान में आयेगा कि उससे हम बीच के काल को बढ़ाते हैं, तो हमें अपनी सारी शक्तियाँ शासनमुक्ति की स्थापना के कार्य में खर्च करनी चाहिए।"

सेना हटाने से भारत की प्रतिष्ठा

एक भाई ने सवाल पूछा कि "आप स्टेट् पर यकीन नहीं रखते हैं और कहते हैं कि फौज, पुलिस वगैरा की जरूरत नहीं है। इस हालत में देश पर बाहरी हमला होगा तो देश का बचाव कैसे किया जायगा?" विनोबाजी–"दूसरा देश हम पर हमला क्यों करेगा? अगर हमारे देश में जमीन बहुत ज्यादा है और दूसरे देश के पास जमीन कम है इसलिए वह हमला करेगा तो हम उसे प्रेम से जमीन दे देंगे। आस्ट्रेलिया में जमीन बहुत ज्यादा है और वहाँ वाले दूसरों को आने नहीं देते हैं, इसलिए उन पर हमला हो सकता है; लेकिन हिन्दुस्तान पर नहीं हो सकता है, क्योंकि हमारे पास जमीन कम ही है। बात ऐसी है कि हिंदुस्तान पर अमेरिका या रूस हमला नहीं करेगा। अगर हमला होगा, तो पाकिस्तान से होगा। याने भाई-भाई के झगड़े का सवाल है। दुनिया में जितने झगड़े होते हैं, सब भाई-भाई के झगड़े होते हैं। उत्तर और दक्षिण कोरिया, चीन और फार्मोसा, अरब और इसराईल, सब भाई-भाई के झगड़े हैं, दुश्मनों के नहीं। भाइयों में एक-दूसरे पर दावा किया जाता है, जो मित्रों में नहीं किया जाता। किसी मित्र ने एकाध दफा एहसान किया, तो आप उसे जिन्दगी भर याद रखते हैं। परंतु भाई हमेशा आपका काम करता हो और किसी एकाध बार उसने आपकी बात नहीं मानी, तो आप उतना ही याद रखते हैं, इसलिए ये सारे झगड़े भाईचारे से मिटेंगे, फौज से नहीं। हम फौज बढ़ायेंगे तो पाकिस्तान भी बढ़ायेगा और फिर विश्वयुद्ध का भी खतरा पैदा होगा। लेकिन आज अगर हिन्दुस्तान हिम्मत करे और अपनी सेना विघटित कर दे, तो हिन्दुस्तान की ताकत बहुत बढ़ जायगी। फिर पाकिस्तान भी फौज पर नाहक खर्च नहीं करेगा। लेकिन इसके लिए हिम्मत चाहिए; यह डरपोक का काम नहीं है। सोचने की बात है कि हम पर किसका हमला होगा। उधर तो एटम और हाइड्रोजन बम बन रहे हैं, जो हमारे पास नहीं है, फिर भी हम कहते हैं कि हमारे पास एक चाकू तो होना ही चाहिए। अगर हिन्दुस्तान अपनी सेना हटा देगा, तो वह दुनिया में सबसे मजबूत राष्ट्र बन जायगा। उससे उसकी नैतिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ेगी, यू. एन. ओ. में उसका वजन बढ़ेगा और वह पाकिस्तान की जनता का दिल जीत लेगा।

विज्ञान अंग्रेजी के घेरे में बन्द

एक सवाल पूछा गया कि "आज विज्ञान के विकास के साथ देहातों का विकास क्यों नहीं हो रहा है?" विनोबाजी ने कहा—"हम चाहते हैं कि विज्ञान खूब बढ़े और उसका लाभ गाँववालों को मिले। आज यह इसलिए नहीं हो रहा है कि हिन्दुस्तान का विज्ञान अंग्रेजी भाषा में रुक गया है। अगर विज्ञान मातृभाषा के जरिये सिखाया जाता तो गाँव-गाँव में मिलता। लोग गलत समझे हुए हैं कि विज्ञान के लिए अंग्रेजी भाषा की जरूरत है।

पाकिस्तान से आये हुए भाई के साथ काफी देर तक दिलचस्प चर्चा हुई। उस भाई ने कहा—"आपको पाकिस्तान आना होगा। पाकिस्तान की जनता आपका स्वागत करेगी। गरीब और दुखियों के हिमायती का विरोध कौन कर सकता है? पाकिस्तान आपका छोटा भाई है।" इस पर विनोबाजी ने कहा—"जी हाँ, हम जरूर आना चाहेंगे। पाकिस्तान तो हमारा जुज है और हम उसके जुज हैं।……अब यही देखिये न कि आप और हम बातें कर रहे हैं, तो हम एक दूसरे से सीधी, बिना तर्जुमे की, बात कर रहे हैं, लेकिन यहाँ तमिलनाड में हमारा तर्जुमा करना पड़ता है। यहाँ के लोग हमारी बात सीधी नहीं समझ पाते हैं।"

उड़ीसा का प्रथम गांधी-घर

उड़ीसा का प्रथम गांधी-घर गंजाम जिले के बरहमपुर कस्बे से ४६ मील दूर बनाया गया है। प्रथम गांधी-घर के निर्माण का यह श्रेय 'अविली' को ही प्राप्त हुआ है। यह गाँव विकासकार्य आरंभ करने में सबका अगुआ सिद्ध हुआ है। गाँव की मुख्य बस्ती और हरिजन-बस्ती के बीच ६० फुट और ३० फुट के घेरे में बना हुआ यह गांधीघर चारों तरफ खेतों से घिरा हुआ है। इसके चारों तरफ बरामदे हैं। पिछली ११ सितम्बर को 'विनोबा-जयंती' के अवसर पर श्रीमती मालती चौधरी ने इस गांधीघर का उद्घाटन समारंभ किया।

उड़ीसा-सरकार द्वारा विशेष रूप से स्वीकृत २७०० रुपये और ग्राम-निवासियों के ५०० रुपये मूल्य के श्रमदान से यह गांधीघर निर्मित हुआ है। कुछ ही दिनों में आधे एकड़ के इसके अहाते में विविध प्रकार के फूल और फलों के वृक्ष लगा दिये जायेंगे, तब इसकी शोभा और भी बढ़ जायगी। एक बुनियादी शिक्षण-विद्यालय इस भवन में आ गया है तथा अन्य भी कई सामूहिक योजनाओं का श्रीगणेश भी होने वाला है। इस गांधीघर की पावनता और गुरुता देश भर में अनेक स्थानों पर बनी हुई उन विविध प्रस्तर-मूर्तियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व की है, जो देश के अनेक कोलाहलपूर्ण नगरों में फैली हुई हैं। वस्तुतः गांधीजी की भावना से इन प्रस्तर-मूर्तियों का कोई मेल नहीं खाता। दान में मिले गाँवों में से २५ गाँवों में इसी प्रकार के गांधीघर बनवाये जा रहे हैं, जिनमें उत्पादन-केन्द्र खोले जायँगे, सहकारी भंडारों की व्यवस्था की जायगी तथा सार्वजनिक कार्यक्रमों के आयोजन सम्पन्न होंगे।

भूदान-आन्दोलन के बढ़ते चरण

ंजाब की चिट्ठी

११ सितंबर को विनोबाजी का जन्मदिन 'भूजयंती' के रूप में प्रांत भर में मनाया गया। प्रांतीय समिति की ओर से गोविंदगढ़ मंडी में सामूहिक पदयात्रा चली। ११ सितंबर से १८ सितंबर तक सरहिंद तहसील के २० गाँवों में ६७ मील की पदयात्रा हुई। संपत्तिदान, भूदान, समयदान मिला। तहसील और थाना-समितियों की स्थापना करके भविष्य में पदयात्रा जारी रखने का निश्चय हुआ। पटियाला जोन की १६ तहसीलों में से ११ तहसीलों में श्री लाला अचिंतरामजी ने ६ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक भ्रमण किया, जिसके फलस्वरूप सामूहिक पदयात्रा में कार्य करने के लिए कार्यकर्ताओं में उत्साह पैदा हुआ और वातावरण तैयार हुआ। ३७६० रु० सालाना संपत्तिदान के ६३ दानपत्र मिले और ३१६ बीघे के १३ भूदान-पत्र मिले। ३८ भाइयों ने समयदान दिया। ४३३ रु० की साहित्य-बिक्री हुई। ६७ ग्राहक बने। १ मकान दान में मिला। १ भाई ने जीवनदान का संकल्प किया। श्री लालाजी के साथ माता लज्जावती ने भी दौरा किया और महिलाओं तथा स्कूलों में भूदान का काफी प्रचार किया। तहसील और थाना-भूदान-समितियों की स्थापना की गयी।

सामूहिक पदयात्रा-कार्य को विकसित रूप देने की दृष्टि से हरियाणा-क्षेत्र को तैयार करने के लिए क्षेत्रीय संचालक ने संबद्ध करनाल, गुडगाँव, रोहतक तथा हिसार जिले में विभिन्न स्थानों पर कार्यकर्ताओं की सभाओं में मार्गदर्शन किया।

गुड़गाँव जिले में सितंबर में २५ ग्रामों में ७२ मील की पदयात्रा हुई। ३७ बीघा भूमि मिली। ४९७) के संपत्तिदान-पत्र मिले। साहित्य-बिक्री हुई। ग्राहक बनाये गये। भूदान-कार्यकर्ता श्री कंवर किशनजी ने पदयात्रा में १४ साधनदान-पत्र और २ संपत्तिदान-पत्र प्राप्त किये।

हरियाणा क्षेत्र की सामूहिक पदयात्रा के सिलसिले में पानीपत, कैथल, शाहबाद, करनाल में सार्वजनिक सभाओं में सामूहिक पदयात्रा की योजना समझायी गयी। ग्राम झूंपा व लाडवा में शिविर लिये गये। २९ सितंबर को कार्यकर्ता एवं दाताओं की सभा बहन सत्यबाला की प्रधानता में हुई। सितंबर में हिसार जिले में ४० मील की पदयात्रा द्वारा ६७ बीघा भूमि, ३ हल, ३० मन १५ सेर बीज, ३२ संपत्तिदान-पत्र और साधनदान-पत्र मिले। करनाल जिले में ५१ बीघा भूमि, भूदान-पत्र और ३ संपत्तिदान-पत्र मिले। ६६) की साहित्य-बिक्री हुई। ५२ समयदानी मिले।

हरियाणा जोन क्षेत्र में हिसार, गुडगाँव, रोहतक, महेंद्रगढ़ के भूदान-कार्यकर्ताओं का एक शिविर २५ अक्टूबर को भिवानी में हुआ। भूदान-आंदोलन को व्यापक बनाने के लिए सामूहिक पदयात्रा के द्वारा ग्राम-ग्राम, घर-घर में भूदान-प्रचार जोरों से फैलाये जाने की दृष्टि से यह शिविर चला, जिसमें ७० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। श्री दादा धर्माधिकारी, विमला बहन और श्री लाला अचिंतरामजी ने कार्य-कर्ताओं का मार्गदर्शन किया। स्थानीय सीनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज में श्री दादा धर्माधिकारीजी और विमला बहन ने विद्यार्थियों की सभा में कहा—"देश के नवनिर्माण में विद्यार्थी-वर्ग बहुत सहयोग दे सकता है। इसीसे नयी तालीम का लाभ मिलेगा।" शाम को आम सभा भी हुई। सभा में श्री दादा धर्माधिकारीजी ने पूंजीवाद, समाजवाद, सर्वोदय, अहिंसा आदि पर अपने प्रभावशाली विचार रखे। सभाओं में भूदान-गीत भी सुनाये गये। शिविर में संपत्तिदाताओं ने और अन्य कार्यकर्ताओं ने काफी सहयोग दिया।

पानीपत में एक भूदान-शिविर हुआ, जिसमें करनाल, रोहतक और गुड़गाँव के २०० कार्यकर्ता शामिल हुए। उद्घाटन पं० ओमप्रकाशजी त्रिखा, संचालक, गांधी-स्मारक-निधि, ने किया। श्री दादा धर्माधिकारी और विमला बहन ने भाषण किये। सरकारी कन्या हाईस्कूल में ५०० महिलाओं की सभा में श्री विमला बहन ने भूदान का संदेश सुनाते हुए बतलाया कि स्त्री-वर्ग भी आंदोलन में हाथ बँटा सकता है।

—कार्यालय मंत्री

राजस्थान

वितरण-सप्ताह में चुरु जिले की सरदारशहर तहसील के १२ गाँवों में ४० भूमिहीन परिवारों में ४३६७ बीघा भूमि वितरित की गयी। समाप्ति-समारोह के दिन रामसीसर ग्राम की आम सभा में चुरु जिले के जिलाधीश ने भूमिहीनों को प्रमाण पत्र दिये और भूदान की महत्ता समझायी। उपस्थित लोगों से फिर भूमि-दान माँगा, जिस पर तुरन्त ही बड़े प्रेम से दो दाताओं ने २५ बीघा भूमि भूदान में दी। वितरित भूमि में से गोचर और आबादी के लिए भी भूमि छोड़ी गयी है। ५० रु० की सर्वोदय-साहित्य-बिक्री हुई। ग्राहक बने। अनाज के रूप में संपत्तिदान-पत्र मिले। सभी गाँवों के ग्रामवासियों, पटवारियों आदि का अच्छा सहयोग मिला।

डूंगरपुर जिला भूदान-समिति की ओर से ७ से १४ अक्टूबर तक भूमि-वितरण-सप्ताह मनाया गया। जिला-संयोजक ने साथियों सहित सागवाड़ा तहसील के ७ गाँवों में विचार-प्रचारार्थ पदयात्रा की। २ गाँवों में ५४५ बीघा भूमि ११७ परिवारोंमें वितरित की गयी। वितरण-महोत्सव के समय जेठाना तथा भीलूड़ा गाँवों में १० दाताओं द्वारा १२३ बीघा भूमिदान तथा २ बैल साधन दानस्वरूप मिले। पहाड़ी क्षेत्र और आदिवासियों की बस्ती होने के कारण अधिकांश भील-परिवारों में भूमि-वितरण-कार्य सम्पन्न हुआ।

डूंगरपुर जिले में सितम्बर माह में १४ गाँवों में ७२ मील की पदयात्रा हुई। ८५ रु० का सर्वोदय-सहित्य बेचा गया। १५९'ग्रामराज' के ग्राहक और ७ 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक बनाये गये। केंद्रित-उद्योग-बहिष्कार के ४० प्रतिज्ञा-पत्र भरवाये गये। जैनियों के रथयात्रा-महोत्सव के मेले में प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसके द्वारा हाथपीसा आटा, हाथकूटा चावल, घाणी का तेल, लकड़ी व मिट्टी के खिलौने और अन्य देशी वस्तुओं का ही उपयोग करने का प्रचार किया गया। बनकोडा गाँव में गीत, प्रवचन, नाटक द्वारा भूदान का प्रचार किया गया।

महाराष्ट्र प्रदेश की सामूहिक पदयात्रा की प्रगति

कुल १७५ कार्यकर्ताओं की ५० टोलियाँ नंदुरबार, साकरी, नवापूर और तलोदा तहसील में पदयात्रा करते हुए ता० १० अक्टूबर को नंदुरबार शहर में इकट्ठी हुईं। इस पदयात्रा की फलश्रुति इस प्रकार है:—भूदान २१०० एकड़, संपत्तिदान करीब १००० रु०का, साधनदान ८०० रु०का, समयदानी ५०, गुजराती–मराठी भूदान-पत्रिकाओं के ग्राहक ३००,साहित्य-बिक्री ३०० रु०की और दो ग्रामदान मिले। इस शिविर का समाप्ति-समारोह श्री नारायणभाई देसाई की उपस्थिति में नंदुरबार में हुआ। नंदुरबार समारोह-शिविर के बाद सिंदखेडा तहसील के दो-ढाई सौ गाँवों में दो दिन का शिविर आचार्य वि० प्र० लिमये की उपस्थिति में हुआ। श्री नारायणभाई देसाई का भी मार्गदर्शन मिला। ७५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। ता० १३ से २० अक्टूबर तक सिंदखेडा, शिरपुर, शहादा और धुलिया तहसील में करीब २५ टोलियों ने पदयात्रा की। ता० २१ अक्टूबर को श्री. रावसाहब पटवर्धन की अध्यक्षता में धुलिया शहर में इस पदयात्रा का समारोह हुआ। इसी समय धुलिया में संपत्तिदान का प्रचार-कार्य भी किया गया। बम्बई भूदान-समिति के मंत्री श्री. माधवरावजी देशपांडे और सर्वस्वदानी श्री. बदरीनारायण गाडोदिया इस कार्य के लिए बम्बई से पधारे थे। पदयात्राओं की फलश्रुति इस प्रकार है–५० भूमि-दाताओं से ६२५ एकड़ भूदान, ६७ संपत्तिदाताओं से वार्षिक करीब २००० रु० का सम्पत्तिदान, ६६ रु० का साधन-दान, मिला तथा ८ साम्ययोगी मण्डलों की स्थापना हुई और ४५० रु० की साहित्य-बिक्री हुई। ५० ग्राहक भी बने।

प० खानदेश की पदयात्रा समाप्त होने पर ता० २२ अक्टूबर को कलवण गाँव में दो दिन का शिविर हुआ। ता० २५ से ३० अक्टूबर तक नासिक जिले के कलवण और दिंडोरी तहसील में पदयात्रा हुई।

—भाऊ धर्माधिकारी, कार्यवाह

वर्धा तहसील पदयात्रा-वृत्त

वर्धा तहसील में १६ से २३ अक्टूबर तक कुल करीब ३०० देहातों में ७०० कार्यकर्ताओं ने ४० टोलियाँ बना कर पदयात्रा की। ता० १५ को सेवाग्राम, पिपरी, घोराड़, नाचणगाँव, देवली इन पाँच केन्द्रों में प्रचार-तंत्र समझाने, परस्पर परिचय तथा संगठन के लिए शिविर हुए। १६ की शाम तक सब पदयात्रा में निकल पड़े। प्रथम दाता श्री रामचन्द्र रेड्डी ने श्री गोराजी के साथ शिविरों को भेंट दी, जिससे कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा। महिलाश्रम की ७५ बहनें, देहातों के दाता-आदाता, वर्धा तहसील के कार्यकर्ता और प्रांत के ६-७ कार्यकर्ता पदयात्रा में शामिल हुए। आखिर के कुछ दिनों में उड़ीसा के मुख्य मन्त्री-पद का इस्तीफा देने वाले श्री नवकृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी श्रीमती मालतीदेवी ने भी पदयात्रा की।

ता० २२ की शाम को सब टोलियाँ वर्धा में जमा हुईं। ता० २३ को सुबह सबने वर्धा शहर में प्रचार किया। शाम को सम्मेलन में सबने उत्साहवर्धक अनुभव सुनाये। सम्मेलन का संचालन श्री रामचन्द्र रेड्डी ने किया। रात को श्री नवकृष्ण

लायसेन्स नं. ए. ३४ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४
पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त)

चौधरी और श्री जयप्रकाशजी ने जाहिर भाषण में भूदान-विचार सविस्तर समझाया। तपोधन स्व० श्रीकृष्णदासजी जाजू के प्रथम पुण्यतिथि की असवर पर उनकी फोटो को माला पहनायी गयी और प्राप्त सब दान-पत्र उनके अर्पण किये गये। गत वर्ष संकल्प २००० संपत्ति-दान-पत्रों का किया था, वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ।

भूदाता ३२५, प्राप्त भूमि ८०० एकड़, संपत्तिदाता ३२००, वार्षिक दान १५००० रुपये, जीवनदानी ९०, 'साम्ययोग' के ग्राहक ६०, साहित्य-बिक्री ३५० रुपये की हुई।

मध्यप्रदेश—महाकोशल के १४ जिलों में अक्टूबर अंत तक ३५,१९६ दाताओं द्वारा ८९,५४९ एकड़ भूमि मिली। ५३५४ परिवारों में २१,८३५ एकड़ भूमि वितरित की गयी है।

इंदौर में स्वाध्याय-मंडल की ओर से १८ अक्टूबर को चुनाव संबंधी दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए सामूहिक चर्चा हुई। श्री सिद्धराज ढडढा ने चर्चा में कहा—"सर्वोदय का हेतु अहिंसात्मक समाज-रचना होने से शोषण और विषमता हटाना जरूरी है। अहिंसात्मक समाज-रचना में शासन की जरूरत नहीं और इस दृष्टि से चुनाव से हमारा कोई संबंध नहीं।"

संवाद-सूचनाएँ :

अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा-परिषद

अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा-परिषद की कार्यकारिणी की बैठक आगामी दिसम्बर के मध्य में गोरखपुर में हो रही है। यदि परिषद के कोई सदस्य या प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी कोई विशेष सुझाव विचारार्थ उपस्थित करना चाहते हों, तो भेज सकते हैं।

—धर्मचंद्र सरावगी, प्र० मंत्री

अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा-परिषद,
८।१ एस्प्लेनेड इस्ट, कलकत्ता १.

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन समाचार

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन के साहित्य की सरकारी मान्यता सम्बन्धी जानकारी विभिन्न संस्थाओं एवं पुस्तकालयों द्वारा प्रायः पूछी जाती है। सामुदायिक योजना-प्रशासन केन्द्रीय सरकार द्वारा सभी प्रदेशों के विकास-आयुक्तों को अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, राजघाट, काशी या सर्व-सेवा-संघ, वर्धा द्वारा प्रकाशित सर्वोदय-साहित्य और 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक मँगाने के लिए एक वर्ष पूर्व ही परिपत्र सं० CPA/Pub/10/(2)/55 दिनांक ८-११-५५ निकला है। पंचायत राज उत्तर प्रदेश, विकास आयुक्त उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और विन्ध्यप्रदेश द्वारा भी परिपत्र निकल चुके हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष बिहार ने अपने सभी राजकीय पुस्तकालयों में 'भूदान-यज्ञ' और 'भूदान-तहरीक' मँगाने का आदेश निकाल दिया है। जिन लोगों को इन परिपत्रों की प्रतिलिपियों की आवश्यकता हो, वे **सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट,** काशी से मँगा सकते हैं।

—संचालक

संघ के नये प्रकाशन :

एक बनो नेक बनो—(उर्दू)—विनोबा, पृष्ठ-संख्या ६४, मू० ।)

'एक बनो और नेक बनो' व 'गाँव गाँव में स्वराज्य' नामक हिन्दी पुस्तकों को एक में मिला कर तैयार की गयी यह पुस्तक उर्दू पाठकों को विनोबा-विचार समझने में बड़ी ही सहायक सिद्ध होगी, क्योंकि हम एक बनें और नेक बनें, यह आज सभी चाहते हैं, पर कैसे बनें, यह इसमें दिया है।

ज्ञानदेव चिन्तनिका—विनोबा, पृष्ठ-संख्या १३८, मूल्य ।।।)

ज्ञानदेव का ज्ञान सर्वजनहिताय है। उस पर विनोबा का चिन्तन जानने के लिए श्री दामोदरदासजी मूँदड़ा ने मूल मराठी का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी पाठकों को भी वह चिन्तन सुलभ कर दिया है। विषयवार दिये हुए इन १५० पदों में प्रत्येक पद अपना विशेष महत्त्व रखता है।

आठवाँ सर्वोदय-समाज-सम्मेलन : पृष्ठ-संख्या २३६, मूल्य एक रुपया

ता. २७, २८, २९ मई, १९५६ को काँचीपुरम् में हुए आठवें सर्वोदय-सम्मेलन का विवरण इस पुस्तक में संगृहीत है। विनोबाजी तथा अन्य लोगों के भाषणों के साथ सर्व-सेवा-संघ का प्रस्ताव, चर्चा-मंडलों की रिपोर्ट व अध्ययन-मंडलों के विवरण एकसाथ जानने के हेतु हर सर्वोदय-प्रेमी के लिए यह पुस्तक उपादेय है।

—गुरुशरण

विनोबा का स्वास्थ्य

आचार्य विनोबा भावे, जो गत ३ नवम्बर को सहसा अस्वस्थ हो गये थे, अब पूर्वापेक्षा अधिक स्वस्थ हैं। उनके स्वास्थ्य में पर्याप्त प्रगति हुई है और दुर्बलता भी बहुत कुछ घटी है। ७ नवम्बर को वे सवा मील पैदल चले और थोड़ी देर तक उन्होंने प्रार्थनोत्तर प्रवचन भी किया। पिछली १२ तारीख से उन्होंने धारापुरम् से, जहाँ वे इस बीच विश्राम करते रहे, पदयात्रा प्रारंभ कर दी है।

खादीग्राम में शिविर

अ. भा. सर्व-सेवा-संघ की ओर से विद्यार्थी तथा नवयुवक, शिक्षक और कार्यकर्ताओं का शिविर २६ दिसंबर '५६ से १ जनवरी '५७ तक श्रमभारती, पो० खादीग्राम (जि० मुँगेर) बिहार में होगा। खादीग्राम का रेलवे स्टेशन जमुई है, जो इस्टर्न रेलवे के झाझा तथा किउल के बीच पड़ता है। खादीग्राम जमुई स्टेशन से तीन मील उत्तर-पूर्व की ओर मुँगेर रोड पर नूमर गाँव के पास है। जमुई स्टेशन से खादीग्राम पहुँचने के लिए बस, तांगा आदि वाहन की सुविधा है।

शिविर के प्रवक्ताओं में श्री जयप्रकाशजी, श्री दादा धर्माधिकारी श्री धीरेंद्रभाई मजूमदार तथा श्री रवींद्र वर्मा आदि सर्वोदय-विचारक रहेंगे। शिविर में वैचारिक चर्चा तो होगी ही, परन्तु प्रत्यक्ष काम का संगठन कैसे हो, इस पर ही अधिक जोर दिया जायगा।

प्रान्तीय भूदान-समितियों के द्वारा भेजे गये कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य युवकों को भी शिविर में प्रवेश दिया जायगा। जो लोग शिविर में भर्ती होना चाहें, वे ५ दिसम्बर १९५६ तक सर्व-सेवा-संघ, पो० बुनियादगंज, गया (बिहार) के पते पर अपना आवेदन-पत्र भेजें, जिसमें उनकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यताओं और समाज-सेवा सम्बन्धी कार्यों के अनुभव का उल्लेख रहे। आवेदन-पत्रों पर विचार करने के बाद उपयुक्त व्यक्तियों को सूचित किया जायगा। उनके निवास और भोजन की व्यवस्था संघ करेगा।

समस्त भूदान-प्रेमियों की सेवा में—

सर्व-सेवा-संघ की ओर से हिन्दी साप्ताहिक 'भूदान-यज्ञ' निकलता है, अंग्रेजी में भी साप्ताहिक 'भूदान' ३७४ शनिवार पेठ, पूना से निकलने लगा है। अंग्रेजी साप्ताहिक को शुरू हुए ७ मास हुए, पर अभी उसकी ग्राहक-संख्या जैसी होनी चाहिए, नहीं है। अतः सर्व-सेवा-संघ को घाटा भी काफी उठाना पड़ रहा है। इस समय देश के विभिन्न प्रान्तों से देश की करीब एक दर्जन भाषाओं में भूदान-पत्र-पत्रिकाएँ निकल रही हैं और अपने-अपने क्षेत्र में उनका अच्छा प्रचार है। फिर भी हर प्रांत में ऐसे लोग हैं, जिन तक हम अंग्रेजी के माध्यम से ही पहुँच सकते हैं। शिक्षण-संस्थाओं, पुस्तकालयों आदि में भी अंग्रेजी साप्ताहिक पहुँचाना उपयोगी होगा।

उर्दू में भी 'भूदान तहरीक' के नाम से पाक्षिक-पत्र राजघाट, काशी से प्रकाशित होता है। उर्दू पढ़ने वाले करीब-करीब हर प्रांत में मिल जाते हैं। अतः निवेदन है कि आप अंग्रेजी और उर्दू दोनों पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने की ओर भी विशेष ध्यान दें। थोड़ी-सी कोशिश से हर प्रांत में सौ-दो सौ ग्राहक प्रत्येक पत्रिका के तुरन्त बना लेना मुश्किल नहीं होना चाहिए।

अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, पो० बुनियादगंज, गया —वल्लभस्वामी, सहमंत्री

विषय सूची

	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	भारतीय स्त्रियों के लिए त्रिविध कार्य	विनोबा	१
२.	अहिंसक राजनीति में विरोधी पक्ष	जा० कॉ० कुमारप्पा	२
३.	ग्रामदान के बाद कोरापुट : राजनीति	गोपबंधु चौधुरी	३
४.	ग्रामसेवकों का कर्तव्य	महात्मा गांधी	४
५.	बहुमतवादी लोकतंत्र की असफलता	लक्ष्मीनारायण भारतीय	४
६.	३२ साल प्रवृत्तियोग के बाद निवृत्तियोग	विनोबा	६
७.	सर्वोदय की दृष्टि :		
	१. सरकारी उद्योग-नीति और सर्वोदयी उद्योगनीति	धीरेंद्र मजूमदार	६
	२. अहिंसा का मंगल द्वार सामने है	दादा धर्माधिकारी	७
८.	इतिहास की पार्श्वभूमि में 'स्वदेशी' का अर्थ	विनोबा	७
९.	विनोबा-प्रवचन-सार	,,	८
१०.	तमिलनाड की पदयात्रा से	निर्मला देशपांडे	१०
११.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण, सूचनाएँ आदि	—	११-१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव-भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी। फोन नं० १२८५